बच्चों की संपूर्ण पत्रिका

बाल भारती

1948 से प्रकाशित

वर्ष 71 : अंक : 9 पृष्ठ : 56 | माघ-फाल्गुन 1940 | फरवरी 2019

लेख

हवा हूं हवा मैं बसंती हवा हूं	प्रयाग शुक्ल	6
भाषा : संस्कृति की संवाहक	नवनीत कुमार गुप्ता	13
पेंगुइन	दीपक कोहली	20
फिल्मों में बच्चों के गीत	राजीव श्रीवास्तव	36
निशानेबाजी : कमाल कर रही है युवा ब्रिगेड	सुरेश कौशिक	48

कहानियां

सफलता का राज	राज शेखर	9
जंगल और बहेलिया	अखिलेश श्रीवास्तव चमन	16
पूंछ कटा चूहा	पवन चौहान	22
मटरू की चतुराई	सुधा तैलंग	25
मिनी पिकनिक	राम करन	34
नकल का धोखा	रन्दी सत्यनारायण राव	40
खिड़की का कांच	ऋषि मोहन श्रीवास्तव	42

कविताएं

बन्दर मामा	श्याम मठपाल	12
भारी बस्ता	बलवंत	24
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती	सोहनलाल द्विवेदी	28
बेटियां	स्वाती शाकम्भरी	50

उपन्यास

पिंकू के कारनामे	44
चित्रकथा	30-33

वरिष्ठ संपादक : **राजेंद्र भट्ट**
संपादक : **आभा गौड़**
दूरभाष : 011-24362910
व्यापार व्यवस्थापक
ई-मेल : *pdjucir@gmail.com*
दूरभाष : 011-24367453

संयुक्त निदेशक (उत्पादन) : **वी. के. मीणा**
आवरण : **राजिन्द्र कुमार**
चित्रांकन : **अनिल तिवारी, शिवानी, प्रज्ञा उपाध्याय**

ई-मेल : *balbharti1948@gmail.com*
वेबसाइट : *www.publicationsdivision.nic.in*
फेसबुक पेज : *www.facebook.com/publicationsdivision*

संपादकीय पत्र व्यवहार का पता :
संपादक 'बाल भारती', कमरा नं- 645, छठा तल, सूचना भवन, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

हमारी बात

मौसम कोई भी हो हम भारतीय हर मौसम का आनंद उठाते हैं। हमारी परंपराएं, मान्यताएं, वेषभूषा, खानपान और सबसे महत्वपूर्ण हमारा मन, हर ऋतु के साथ अपने रंग बदलते हैं। और जब आगमन ऋतुराज वसंत का हो तो कहना ही क्या... प्रकृति मानो खुद उत्सव मनाने निकल पड़ती है... पूरे साज-सिंगार और जीवंतता के साथ। इस सजीली प्रकृति का पूजन हम वसंत पंचमी के पर्व के रूप में करते हैं और कामना करते हैं सतत ऊर्जा बनाए रखने की, वह ऊर्जा जो जीवन को आनंदित और गतिमान बनाए रखती है।

ठिठुरती सर्दियों में गहरी नींद लेने के बाद प्रकृति में नव जीवन का संचरण होने लगता है। प्रकृति की रंगबिरंगी छटा उसके नव सृजन में दिखने लगती है। नवीन कोंपलों से सारे पेड़-पौधे हरे-भरे, ताज़ातरीन दिखाई देते हैं। रंगीन फूलों पर तितलियां और भंवरे मंडराने लगते हैं। फूलों की खुशबू वातावरण को आह्लादित कर देती है। वसंती बयार, लहलहाती फसलें, पक्षियों का गुंजन और चंदा की चांदनी सभी सुहाने लगते हैं। ऐसे में मौसम की यह सुंदरता हमें भी ऊर्जावान और कलात्मक बना देती है। मानो प्रकृति हमें कह रही हो 'आओ वसंत के साथ पुन: नई शुरुआत करें'।

बच्चो! एक नई शुरुआत तो इस दौरान आप सभी के जीवन में भी दस्तक दे रही है। आपका जीवन भी भविष्य की ओर एक सुदृढ़ कदम बढ़ा रहा है। जी हां! सालाना परीक्षाएं! नई कक्षा, नए विषय और जीवन के सफ़र की एक नई शुरुआत! यह शुरुआत आपके जीवन की सफलताओं का महत्वपूर्ण पैमाना है जिसे वसंत की तरह आपने अपनी मेहनत के रंगों से संवारना है। जितनी लगन और परिश्रम से अपनी छवि में यह रंग भरेंगे उतनी ही खूबसूरती से आपका जीवन संवरता जाएगा... खिलता जाएगा। मौसम अनुकूल है- आप तैयार हैं तो आगे बढ़ने से रोक कौन सकता है? तो डट जाइए परीक्षा की तैयारियों में। हमारी शुभकामनाएं तो सदैव आपके साथ हैं।

आपकी बात

मैं विगत एक वर्ष से *बाल भरती* का प्रेमी पाठक हो गया हूं। मुझे इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार रहता है। घर के पास पोस्ट ऑफिस में मैं पूछने चला जाता हूं कि *बाल भारती* आई है या नहीं। *बाल भारती* की कहानियां मैं अकेले नहीं पढ़ता, अपने दोस्तों के साथ पढ़ता हूं। उन्हें भी यह पत्रिका बहुत पसंद है। दिसंबर 2018 अंक मुझे बहुत ही अच्छा लगा। इस अंक में प्रकाशित लेख *जो कहा है, उसे पूरा करो, परिवर्तन के लिए विज्ञान* और *विश्व के सात अजूबों में से एक-पेट्रा* अच्छा लगा। कहानियों में *बरगद का चश्मा, बबलू और बूजो* और *पेंटिंग* पठनीय थे। इस पत्रिका में प्रकाशित कविताएं भी बहुत अच्छी होती हैं। इसलिए *बाल भारती* मेरी प्रिय पत्रिका है।

–अमित, रांची, बिहार

बाल भारती का दिसंबर अंक पढ़ा। बहुत पसंद आया। इसमें प्रकाशित कहानियां, *ईश और चूहा* तथा *चालाकी बन गई टिम्मी* मनोरंजक थीं। कविताओं में *बचपन है तो जीने दो* तथा *इस सर्दी ने तो* बहुत रोचक लगी। लेख भी अच्छे लगे। लेखों में *परिवर्तन के लिए विज्ञान, कैसे पाएं परीक्षा में अच्छे अंक* और *विश्व के सात अजूबों में से एक-पेट्रा* अच्छी लगी। *बाल भारती* बच्चों के लिए चूंकि एक बेहतरीन पत्रिका है। यह पत्रिका बच्चों पर आधारित है इसलिए इसमें बच्चों के ही स्तर की कविता, कहानियां हैं। मैं बहन को भी यह पत्रिका पढ़ाता हूं। *बाल भारती* को हमारी शुभकामनाएं! आशा है यह आगे भी ऐसी ही रोचक और बालप्रिय रचनाएं देती रहेगी।

–गौरव, नई दिल्ली

मन में नया जोश जगा जाती *बाल भारती*,
हर महीने मिलने आ जाती है *बाल भारती*
ज्ञान-विज्ञान मनोरंजन का खज़ाना लुटा जाती *बाल भारती*
किसी एक देश की सैर करा जाती है *बाल भारती*।
कहानियों, कविताओं का पिटारा दे जाती *बाल भारती*,
देश-देश की खबर सुना जाती है *बाल भारती*।
हर महीने अमर कथा पढ़ा जाती है *बाल भारती*
हमारी बात सब बच्चों को पढ़ाने आ जाती *बाल भारती*।

–बद्री प्रसाद वर्मा अनजान,
गोरखपुर

बाल पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विषय में अपनी प्रतिक्रिया हमें भेजें।
आप हमें ई-मेल balbharti1948@gmail.com पर भी अपनी प्रतिक्रिया भेज सकते हैं। लेखकों से निवेदन है कि वे रचना के साथ अपना पता, ई-मेल, फोन नंबर, अवश्य भेजें। रचना की छायाप्रति अपने पास रखें। अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी।

हवा हूं हवा मैं बसंती हवा हूं

–प्रयाग शुक्ल

वसंत आता है तो वसंती हवा चलती है। वह अलग होती है, गर्मियों की तपती हुई हवा से। अलग तरह की होती है, वर्षा में भीगी हुई हवा से। सर्दी की सर्द हवाओं से तो अलग होती ही है। यह वसंती हवा सर्दियों के बाद ही तो चलती है। हमें ठंड से राहत दिलाती है। फूल भी मानो ठिठुरन से मुक्ति पाते हैं। खूब खिलते हैं- तरह-तरह के। खेतों में भी सरसों का पीलापन छा जाता है। धूप मीठा-मीठा गाती है। पंछियों के बोल कुछ और मधुर हो जाते हैं। आम के पेड़ों पर बौरें आती हैं... मंजरियां। मधुमक्खियों और तितलियों में भी एक उत्साह सा भर जाता है। वे इधर-उधर उड़ती दिखाई पड़ती हैं। कोयल कुहू-कुहू बोलती है। और विद्या की देवी सरस्वती! वह भी मानो प्रसन्न हो उठती हैं, इस वातावरण से।

उनकी मूर्तियां सजती हैं।

हम उन्हें प्रणाम करते हैं!

खेलने-कूदने का आनंद भी इसी ऋतु में है। छोटी-छोटी दुपहिया चलाने वाले बच्चे जानते हैं, साइकिल चलाने का आनंद वसंत में!

हां, भाई! न लू लगने का खतरा होता है, न ठंड लगने का। न सर्दी-जुकाम लग जाने का। न ही वर्षा में भीग जाने का। आसमान भी कुछ धुला-पुंछा हुआ ही मिलता है। खिला-खिला। जब साइकिल चलाते हुए, हवा भी

साथ-साथ चल पड़ती है, तो ऐसा लगता है जैसे उसे भी मज़ा आ रहा हो, साइकिल की सवारी का! और खाने-पीने का स्वाद, वह भी तो बढ़ जाता है वसंत में। गर्मागर्म चीज़ें भी खा सकते हैं। इडली-सांभर जैसी, पूरी-सब्जी जैसी और आइसक्रीम के लिए भी मनाही कहां होती है। सच तो यह है कि पहाड़ी, बर्फीले इलाकों का भी मिज़ाज़ बदल जाता है। बर्फ पिघल चुकी होती है। फरवरी-मार्च के महीने ही तो वसंत के महीने हैं। वसंत-पंचमी की विशेष महिमा है। इस दिन पीले, वसंती परिधान पहनने का एक चलन भी है। वसंत में ही तो होली की भी आहट सुनाई पड़ने लगती है। अब थोड़ी देर के लिए ठहर जाएं और फिर वसंती हवा की ओर लौटें, जिस पर हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि केदारनाथ अग्रवाल ने एक सुंदर कविता लिखी है। हो सकता है आपने पढ़ी भी हो। न पढ़ी हो, तो लीजिए अब पढ़ने की बारी है, पूरी न सही, दस-पंद्रह लाइनें ही।

''हवा हूं, हवा मैं
बसंती हवा हूं।
सुनो बात मेरी-
अनोखी हवा हूं।
बड़ी बावली हूं,
बड़ी मस्तमौला।
नहीं कुछ फिकर है,
बड़ी ही निडर हूं।
जिधर चाहती हूं
उधर घूमती हूं,
मुसाफिर अजब हूं।...
हरे खेत, पोखर
झुलाती चली मैं
झुमाती चली मैं।
हवा हूं, हवा मैं,
बसंती हवा हूं।''

बहुत कुछ लिखा गया है वसंत पर। भला किसने नहीं लिखा, कालिदास ने, रवींद्रनाथ ठाकुर ने, तथा और भी बहुत से कवि-लेखकों ने। पर, अब मुश्किल आ खड़ी हुई है। लोग कहते हैं, अब शहरों में यह पता ही नहीं चल पाता कि वसंत कब आया और आकर चला गया। जब धूल-धुएं से हम सब परेशान रहते हैं, तो भला वसंत क्यों न होगा! उसे तो साफ-सुथरा रहना ही पसंद है। गंदगी उसे जरा अच्छी नहीं लगती। सच पूछें तो स्वच्छता अभियान में वह सबसे अधिक बढ़-चढ़कर शामिल होना चाहेगा। भाई, सब कुछ साफ-सुथरा रहेगा, तभी न फैलेगी उसके फूलों की सुगंध। तभी न हल्की होकर, मुस्कराती हुई बहेगी वसंती हवा भी। जिन पेड़ों पर धूल जमी होगी, उनकी डालियों-पत्तों पर कैसे उतरेगा वसंत!

सोचने की बात है!

हम वसंत-पंचमी को एक पर्व-त्योहार की तरह जरूर मनाते हैं। सरस्वती की वंदना करते हैं। पर, वसंत तो वसंत है, वह अपने आप में, समूचा का समूचा ही एक त्योहार से कम नहीं है। उसका हर दिन संजो लेने लायक माना जाता है। उनकी प्रतीक्षा की जाती रही है। अंग्रेजी भाषा के एक बड़े कवि शेली ने लिखी थी ये पंक्तियां वसंत के लिए: *ओ विंड, इफ विंटर कम्स, कैन स्प्रिंग बी फार बिहाइंड?* ओ हवा, अगर जाड़ा है, तो फिर वसंत भी आएगी ही, है न) आशा भरी कविता है यह।

वसंत के सब दिन सुख के माने जाते हैं। 'स्वीमिंग पूलों' में पानी भरे जाने की तैयारी होने लगती है। गांवों में, तालाबों-झीलों-नदियों में तैरने की हिम्मत जुटने लगती है। उसके पहले तो बिना गर्म पानी के नहाना भी मुश्किल लगता है, तैरने की बात तो दूर की रही। हां, वहां लोग जरूर तैरते हैं, जहां गर्म पानी वाले 'पूल' होते हैं। जो भी हो, चाहे जिधर से देखो, चाहे जिधर से जांचो-परखो, ऋतु तो वसंत की ही होती है, सुहावनी! लुभावनी! वसंत के दिन ही नहीं, वसंत की रातें भी अच्छी मानी जाती हैं। उतर जाता है न कंबलों-रजाइयों-गर्म कपड़ों का बोझ! महादेवी वर्मा जी ने अपनी एक कविता में लिखा है:

"पुलकती आ वसंत रजनी।"

हां, रजनी, रात, वसंत की, खुश-खुश ही तो आती है; जैसे आती हैं वसंत की सुबह की किरणें, कोमल, मुलायम, धीमी आंच वाली, हमें सुख देती हैं। जाने न दें वसंत को ऐसे ही। उसके स्वागत की तैयारी करें। हम भी कुछ पौधे-फूल उगाएं। स्वच्छ रखें, आस-पास की जगहों और चीजों को, कि भाई आ रही है वसंत की सवारी! ❑

(लेखक हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार हैं।)
-एच-416, पार्श्वनाथ प्रेस्टीज़, सेक्टर-93ए,
नोएडा-201304

सफलता का राज

–राज शेखर

रोहन की दसवीं की परीक्षा नज़दीक आ गयी थी। उसका चचेरा भाई सुमित भी परीक्षा की तैयारी के लिए रोहन के घर आया हुआ था। सुमित हमेशा अपने परीक्षाफल को लेकर चिंतित रहता था।

रोहन पढ़ाई के साथ-साथ अपने सभी दिनचर्या को पूरा करता था। वह खेलने जाता था। वह दादाजी के साथ घूमने जाता था। सुमित हमेशा किताबों में उलझा रहता था। यह दादाजी की प्रेरणा और उनकी सफल रणनीति का कमाल था कि रोहन बिना किसी परेशानी के परीक्षा की तैयारी में लगा हुआ था। रोहन की तैयारी देखकर उसके दोस्त उससे जिद करते थे कि वे भी दादाजी से मिलेंगे।

एक दिन वे सभी रोहन के घर आए हुए थे। सभी बच्चे दादाजी के साथ परीक्षा की तैयारी कैसे की जाए, इस पर चर्चा कर रहे थे। सौरभ ने कहा- ''मुझे अभी से बहुत डर लग रहा है। पता नहीं मैं परीक्षा में पास हो पाऊंगा या नहीं।''

दादाजी ने उसकी बात सुनकर कहा- ''परीक्षा से पहले ये सब बात नहीं करनी चाहिए। परिणाम के बारे में न सोचते हुए अपनी लगन और मेहनत पर विश्वास करना चाहिए।''

''लेकिन डर तो लगता है दादाजी!'' सुमित ने कहा।

''यह सोचने का सही तरीका नहीं है सुमित। यदि हम सभी काम समय से और व्यवस्थित ढंग से करें तो हमें बिलकुल डर नहीं लगेगा।''

''वह कैसे दादाजी?'' सौरभ ने पूछा।

''सौरभ! जब तुम्हारी मां भोजन बनाती है तो पहले क्या करती है?''

''दादाजी! भोजन से संबंधित सभी पदार्थों को पहले एक जगह जमा करती है, फिर भोजन बनाती हैं।''

''बिलकुल सही। तुम्हारे कहने का मतलब यह हुआ कि हम भोजन तैयार करने से पहले योजना बनाते हैं। ठीक यही बात पढ़ाई के साथ भी है। हम कई बार पढ़ाई के लिए कोई योजना नहीं बनाते। परीक्षा के समय हम सोचते हैं कि सब पढ़ लेंगे और लिख देंगे। लेकिन ऐसा नहीं हो पाता। पढ़ाई की योजना शुरू से

बनानी चाहिए। कालेज या स्कूल में सत्र की शुरुआत से ही अपने विषयों पर ध्यान देने से बच्चों को परीक्षा का कोई तनाव नहीं रहता और परीक्षा के दिनों में आराम से परीक्षा दे सकते हैं। छात्रों को कक्षा में हो रही पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए। जीवन में पढ़ाई का उद्देश्य ज्ञान हासिल करना होता है न कि अपने आपको परीक्षा तक सीमित कर देना। पढ़ाई का मतलब केवल अंक प्राप्ति नहीं होता। यदि सही से अध्ययन किया गया है तो अंक अवश्य मिलेंगे।''

सभी बच्चे बड़े ध्यान से दादाजी की बात सुन रहे थे। फिर दादाजी ने कहना शुरू किया–

''देखो बच्चो! तुम रोज खाना खाते हो?''

''हां दादाजी!'' सभी बच्चों ने एक साथ कहा।

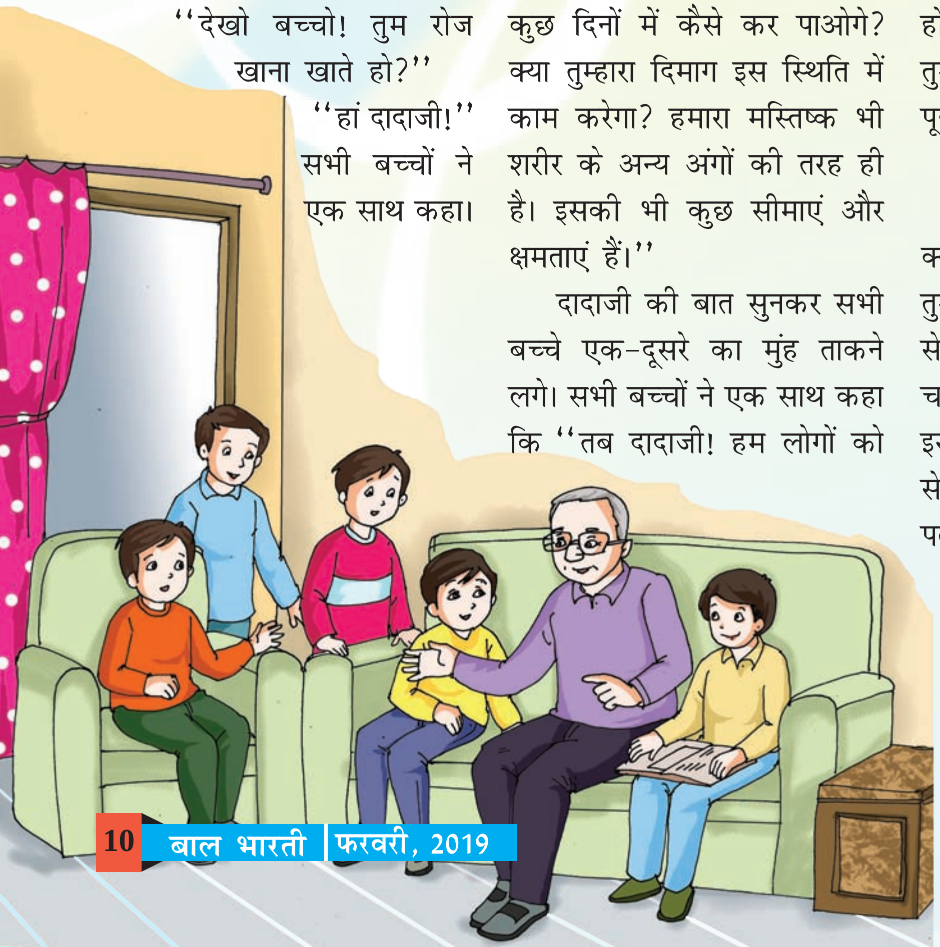

''अब तुम लोग ये बताओ कि यदि तुम एक महीने या एक वर्ष भोजन नहीं करोगे तो क्या होगा?''

''हम लोग जिंदा नहीं रहेंगे।'' सभी बच्चों ने एक साथ कहा।

''और यदि एक महीने या एक वर्ष का भोजन तुम लोगों से एक ही दिन में खाने को कहा जाए तो ...''

''हम लोग नहीं खा सकते और यदि खा लिया तो पेट फट जाएगा या अस्पताल जाना पड़ेगा। हम बीमार पड़ जाएंगे।'' सुमित ने कहा।

''अब जरा सोचो कि तुम एक वर्ष का भोजन एक दिन में नहीं खा सकते तो पूरे एक वर्ष की पढ़ाई कुछ दिनों में कैसे कर पाओगे? क्या तुम्हारा दिमाग इस स्थिति में काम करेगा? हमारा मस्तिष्क भी शरीर के अन्य अंगों की तरह ही है। इसकी भी कुछ सीमाएं और क्षमताएं हैं।''

दादाजी की बात सुनकर सभी बच्चे एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। सभी बच्चों ने एक साथ कहा कि ''तब दादाजी! हम लोगों को अच्छा करने के लिए क्या करना चाहिए?''

''देखो बच्चो! सबसे पहले तुम लोगों को अपने जीवन का उद्देश्य बनाना चाहिए; फिर उसके अनुसार पढ़ाई करनी चाहिए। अच्छा बताओ। तुम लोग भौतिकी की प्रयोगशाला में लेंस का फोकल लेंथ निकालते हो।''

''हां दादाजी!''

''यदि फोकल लेंथ गड़बड़ हो जाएगा तो फोकस सही नहीं होगा। तुम्हारे जीवन का उद्देश्य तुम्हारा फोकस है और तुम्हारा कर्म तुम्हारा फोकल लेंथ। यदि इसमें से कोई भी गड़बड़ होगा तो तुम अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाओगे। अच्छा! ये बताओ कि तुम लोग कभी अपने आप से प्रश्न पूछते हो।''

''कौन-सा प्रश्न?''

''यही कि मैं अपने जीवन में क्या कर रहा हूं? मेरी सलाह मानो, तुम लोगों को रोज रात में सोने से पहले यह प्रश्न अवश्य पूछना चाहिए। तुम लोग देखोगे कि तुम्हें इसका उत्तर मिलेगा और इसी उत्तर से तुम अपने आपको और अपनी पढ़ाई को व्यवस्थित कर पाओगे।''

दादाजी की बात सुनकर सभी बच्चे सोच में पड़ गए। फिर दादाजी ने कहना प्रारंभ किया

''हमारा समय रुपयों से भी बहुत कीमती होता है। यदि मैं

तुम्हें 500 रुपये देता हूं तो उसे सोच समझकर खर्च करते हो। ईश्वर ने तुम्हें समय दिया है तो एक-एक क्षण का उपयोग सोच समझकर करो। पढ़ाई के लिए बहुत जरूरी है कि तुम सभी एक दिनचर्या बनाओ और उसके अनुसार एकाग्रचित्त होकर अपने आपको ढालकर पढ़ाई करो। अपना बहुमूल्य समय बेकार की चीजों में मत खर्च करो। जैसे- मोबाइल फोन, सोशल मीडिया या विडियो गेम।''

''किसी भी विषय को पढ़ने से पहले रणनीति तैयार करना बहुत जरूरी होता है। सर्वप्रथम पाठ्यक्रम को देखना चाहिए। उससे संबंधित बेहतरीन किताबों की सूची तैयार करनी चाहिए। स्तरहीन किताबों एवं बेकार तरह के गाइड को पढ़ने से बचना चाहिए। बच्चों के पास विगत वर्ष का प्रश्न पत्र होना चाहिए। एक बार प्रश्न पत्रों का अध्ययन करना बेहद जरूरी होता है। प्रश्न पत्र के अध्ययन से पता चलता है कि उस विषय को पढ़ने की रूप रेखा कैसे तैयार करनी है।''

''किसी भी पुस्तक को पढ़ते समय एक लक्ष्य बनाना चाहिए कि इसे इस अवधि में समाप्त करना है... एक सप्ताह में या दो सप्ताह में। किसी अध्याय को पढ़ने के बाद एक संक्षिप्त नोट्स बनाना जरूरी होता है। किसी भी विषय पर मौलिक ढंग से सोचने की क्षमता पर भी जोर देना आवश्यक है।''

''पढ़ने का सबसे अच्छा तरीका होता है तेज अध्ययन करना। हम अपने दिमाग का जितना तेज उपयोग करते हैं, वह उतना ही तेज परिणाम देता है। इसलिए सभी को फास्ट लर्नर बनना चाहिए न कि स्लो लर्नर। अक्सर कुछ बच्चे एक अध्याय को पढ़ने के लिए काफी वक्त लगाते हैं और उसी में उलझे रहते हैं। इसलिए एक समय सीमा के अंदर लक्ष्य बनाकर तेज गति से अध्ययन करना अच्छा होता है।''

''किसी भी विषय को समझकर याद करना चाहिए। केवल रटने भर से वह विषय बहुत दिनों तक दिमाग में याद नहीं रहता। याद करने के बाद समय-समय पर उससे संबंधित प्रश्नों का उत्तर लिखकर अभ्यास करना चाहिए। उसके बाद अपने लिखे उत्तर का मूल्यांकन करना चाहिए ताकि उसे सुधारने का और बढ़िया बेहतर बनाने का मौका मिल सके। इससे विद्यार्थी के लेखन शैली का विकास होता है और विश्लेषण करने की क्षमता बढ़ती है। एक निश्चित समय सीमा के अंदर बंधकर घर में परीक्षा देने का प्रयास करना चाहिए। कुछ बच्चे सभी प्रश्नों का उत्तर जानते हुए भी परीक्षा में तय समय सीमा के अंदर उत्तर पूरा नहीं लिख पाते और उनका जवाब अधूरा रह जाता है।

''तुम लोगों को पढ़ाई और परीक्षा को लेकर ज्यादा तनाव में नहीं रहना चाहिए। कई बच्चे तनाव के कारण पर्याप्त नींद नहीं ले पाते। रात में ज्यादा देर तक पढ़ाई करनी और सुबह फिर जल्दी उठकर पढ़ना सही तरीका नहीं है। इसका असर स्वास्थ्य पर पड़ता है। ऐसा करने पर दिमाग सुस्त हो जाता है और उसकी कार्यक्षमता प्रभावित होती है। चूंकि दिमाग को भी आराम की जरूरत है, इसलिए सभी को सात से आठ घंटे सोना चाहिए।''

''अधिकांश बच्चे परीक्षा शुरू होने के कुछ दिनों पहले तैयारी करना शुरू करते हैं। उन्हें कम समय में ज्यादा पढ़ना पड़ता है। यह सही तरीका नहीं है। परीक्षा के अंतिम समय में *रीविजन* करना चाहिए। इससे बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है।''

''बच्चों को पढ़ाई के समय अपने स्वास्थ्य पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। अच्छे और स्वास्थ्यवर्धक भोजन के साथ-साथ शारीरिक व्यायाम अति आवश्यक है। व्यायाम करने से शरीर चुस्त-दुरुस्त रहता है। इससे शरीर में रक्त संचार होता है। दिमाग को सही मात्रा में ऑक्सीजन मिलती है और वह तेज गति से काम करता है। कुछ बच्चे ये सोचते हैं कि खेलने से समय का नुकसान होता है। उनकी यह धारणा गलत है।''

"केवल किताबों में लगे रहने से दिमाग बोझिल हो जाता है। इसलिए हल्के-फुल्के मनोरंजन की जरूरत होती है। कभी-कभी अपने लोगों के साथ संवाद होते रहने से मन शांत और प्रसन्नचित्र रहता है। पढ़ाई बोझिल नहीं लगती।"

"पढ़ाई के अलावा सबसे महत्त्वपूर्ण चीज है परीक्षा में तुम्हारी प्रस्तुति। सभी प्रश्न महत्त्वपूर्ण होते हैं। इसलिए उत्तर लिखते वक्त समय का बंटवारा सही होना चाहिए। ऐसा न हो कि कुछ प्रश्नों पर ज्यादा समय दे दो और कुछ पर कम। इससे औसतन अंक प्रभावित हो जाते हैं। सुंदर लिखावट के साथ-साथ यदि तुमने बिंदुवार ढंग से प्रश्न का उत्तर लिखा है तो तुम्हारी उत्तर पुस्तिका दूसरों से बेहतर नजर आएगी और अंक भी उम्मीदानुसार मिलेंगे।"

"तुम लोगों से बातचीत करते हुए समय का पता ही नहीं चला। अरे! मुझे डॉक्टर के पास चेकअप के लिए जाना था।" यह कहकर दादाजी वहां से उठकर बाहर चले गए।

उनके जाने के बाद सभी बच्चे रोहन के घर कुछ देर और रुके। उन लोगों ने परीक्षा देने की योजना तैयार की। रोहन के घर से जाते समय सभी बच्चों के चेहरे पर गजब का उत्साह और आत्मविश्वास झलक रहा था।

तीन महीने बाद पुनः सभी बच्चे रोहन के घर उपस्थित थे। चारों तरफ जश्न का माहौल था। रोहन ने पूरे राज्य भर में द्वितीय स्थान प्राप्त किया था। सभी उसे बधाई देने आए थे। अन्य बच्चों ने भी परीक्षा में काफी अच्छा प्रदर्शन किया था। आज सुमित भी बहुत खुश था क्योंकि उसे भी अस्सी प्रतिशत से ज्यादा अंक प्राप्त हुए थे। ❑

-एच. 1103, टी. एन. ए. आई. एस. हाउसिंग काम्पलेक्स, वेस्ट नटेशन नगर, विरूगमबाकम, चेन्नई, तमिलनाडु: 600092

बंदर मामा

-श्याम मठपाल

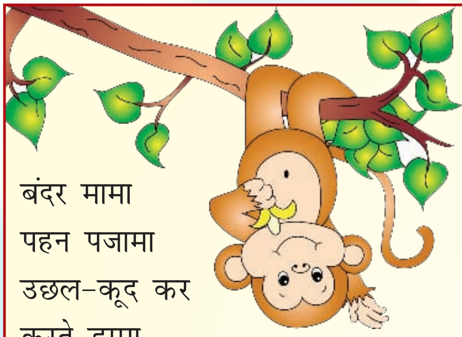

बंदर मामा
पहन पजामा
उछल-कूद कर
करते ड्रामा
छलांग लगाते
फल हैं खाते
बड़े हैं चंचल
बहुत फैलाते
बच्चों को डराते
आंख फिराते
सामान उठाकर
तुरंत भागते
झुंड में रहते

प्रेम ये करते
ठंड हो या गर्मी
सब ये सहते
चाल मस्तानी
अल्हड़ जवानी
खूब दौड़ते
नहीं कोई सानी
बच्चों को चिपका कर रखते
नहीं गिरने से डरते
बड़े प्यार से दूध पिलाते
ढूंढ-ढूंढ कर जूं ये खाते

न कोई मकान
न कोई सामान
चलता सफ़र
इनकी है शान
एक होता मुखिया
नहीं कोई दुखिया
सब आदेश मानते
घूमते हैं दुनियां
खतरे में भागते
सब चिल्लाते
खतरे पर नज़र
सबको बचाते

-डी-26, गुप्तेश्वर नगर, सेक्टर-7, उदयपुर-313 002

भाषा संस्कृति की संवाहक

–नवनीत कुमार गुप्ता

भाषा हमारे विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। भाषा संवाद की एक अहम कड़ी है। लेकिन विद्वानों ने, भाषा को संवाद के माध्यम से कहीं बढ़कर मानवता की आधारभूत कड़ी भी बताया है। भाषा किसी संस्कृति की जीवनरेखा होती है और एक तरह से समाज के व्यापक परिवेश को परिभाषित भी करती है।

भाषा केवल संचार में ही अहम भूमिका नहीं निभाती, बल्कि सहभाषियों को एक धागे में पिरोने का भी काम करती है। यह एक सामूहिक पहचान देने के साथ ही सांस्कृतिक मूल्यों के एक आवश्यक तत्व का निर्माण करती है। किसी भाषा की कहावतें जब एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती हैं तो वे उस समाज की रस्मों, रिवाजों और मूल्यों को प्रतिध्वनित करती हैं।

पूरे विश्व में लगभग 6800 भाषाएं बोली जाती हैं। इनमें से 90 प्रतिशत भाषाओं को बोलने वालों की संख्या 1 लाख से भी कम है। केवल 150 से 200 भाषाएं ही ऐसी हैं जिनको 10 लाख से अधिक लोग बोलते हैं। लगभग 357 भाषाएं ऐसी हैं जिनको मात्र 50 लोग ही बोलते हैं। इतना ही नहीं 46 भाषाएं ऐसी भी हैं जिनको बोलने वालों की संख्या मात्र 1 है।

दुर्भाग्यवश संचार के माध्यमों में वृद्धि के साथ ही कई ऐसी छोटी भाषाएं हैं जो लुप्तप्राय हैं। इन भाषाओं के लुप्त होने के साथ ही इन्हें बोलने वालों की संस्कृति भी समाप्त होने की संभावना है। इसीलिए विभिन्न भाषाओं के सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व को ध्यान में रखते हुए संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 2016 में एक प्रस्ताव को मंजूरी देते हुए वर्ष 2019 को *देशीय भाषाओं का अंतरराष्ट्रीय वर्ष* घोषित किया। इस *अंतरराष्ट्रीय वर्ष* के अंतर्गत विभिन्न आयोजनों हेतु शीर्ष संस्था के रूप में यूनेस्को कार्य करेगा।

भाषा – संस्कृति की जीवनरेखा

वर्तमान में, हम बहुसांस्कृतिक एवं बहुभाषी दुनिया में रह रहे हैं। हमें दुनिया की इस बहुभाषी संस्कृति को सहेजने की आवश्यकता है और इसका सबसे बेहतर तरीका यही है कि प्रत्येक भाषा को संरक्षित करने के साथ ही उसे समुचित रूप से उन्नत बनाया जाए। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी इस बात की आवश्यकता महसूस की थी। भारत ने हमेशा से सभी भाषाओं को सम्मान देते हुए विविधता और बहुलता में विश्वास व्यक्त किया है।

असल में, भाषा और संस्कृति दोनों का आपस

में गहरा संबंध है, इसलिए हमें अपनी देशज भाषाओं को भी सबल बनाने की आवश्यकता है। इनमें वे तमाम भाषा-बोलियां भी शामिल होंगी जो देश में कई आदिवासी समूहों द्वारा प्रयोग की जाती हैं।

भाषाओं और संस्कृतियों का संगम स्थल

भारत में लगभग 1,650 भाषाएं बोली जाती हैं। यानी पूरे विश्व में बोली जाने वाली कुल भाषाओं की लगभग एक चौथाई भाषाएं भारत में ही बोली जाती हैं। अतः भाषाई दृष्टि से भारत एक बहुजातीय या बहुभाषी देश है। हम यह भी कह सकते हैं कि भारत विविध भाषाओं और संस्कृतियों का संगम स्थल है। चूंकि अधिसंख्यक भारतीय हिंदी बोलते हैं तो इसे देश की लिंगुआ फ्रैंका यानी आम भाषा कह सकते हैं। वहीं तेलुगू और बंगाली भी व्यापक स्तर बोली जाने वाली भाषाएं हैं, लेकिन संभवतः तमिल दुनिया की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक है। इसी तरह देश के तमाम इलाकों में बहुत तरह की भाषा एवं बोलियां उस इलाके की भाषाई समृद्धि को व्यक्त करती हैं।

भारत अनेक भाषाओं का देश है। लेकिन सरकारी कामकाज में व्यवहार में लायी जाने वाली दो भाषाएं हिंदी और अंग्रेजी हैं। भारत में द्विभाषी वक्ताओं की संख्या 31.49 करोड़ है, जो 2011 में जनसंख्या का 26 प्रतिशत है।

भारतीय भाषाएं

भारत की मुख्य विशेषता यह है कि यहां विभिन्नता में एकता है। भारत में विभिन्नता का स्वरूप न केवल भौगोलिक है, बल्कि भाषायी तथा सांस्कृतिक भी है। भारतीय संविधान द्वारा 22 भाषाओं को राजभाषा की मान्यता प्रदान की गयी है। भारत में इन 22 भाषाओं को बोलने वाले लोगों की कुल संख्या लगभग 90 प्रतिशत है। इन 22 भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी भी सहायक राजभाषा है और यह मिज़ोरम, नगालैंड तथा मेघालय की राजभाषा भी है। कुल मिलाकर भारत में 58 भाषाओं में स्कूलों में पढ़ाई की जाती है। संविधान की आठवीं अनुसूची में उन भाषाओं का उल्लेख किया गया है, जिन्हें राजभाषा की संज्ञा दी गई है। ये भाषाएं असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, डोगरी, तमिल, तेलुगू, नेपाली, पंजाबी, बांग्ला, बोड़ो, मणिपुरी, मराठी, मलयालम, मैथिली, संथाली, संस्कृत, सिंधी, हिंदी हैं। यहां दस लाख से कम व्यक्तियों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं में प्रमुख भाषाएं खानदेशी, हो, खासी, मुंडारी, कोकबराक भाषा, गारो, कुई,

मीजो, हलाबी, कोरकू, मुंडा, मिशिंग, कार्बीध्मिकिर, सावरा, कोया भाषा, खड़िया, खोंड, अंग्रेजी, निशी, आओ, सेमा, किसान, आदी, रभा, कोन्याक, माल्तो भाषा, थाड़ो, तांगखुल है।

लुप्त होती भाषाएं

भाषा संप्रेषण का माध्यम ही नहीं वह सांस्कृतिक इकाई भी होती है। वह अपनी संस्कृति की कलाकृति भी होती है। भाषा और संस्कृति की अंतरंगता के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि जब एक भाषा मरती है तो उसके साथ एक पूरा समाज और एक पूरी संस्कृति खत्म हो जाती है। उससे जुड़े पारंपरिक ज्ञान और अनुभव की विरासत लुप्त हो जाती है। भाषा और संस्कृति की यह क्षति पूरी मानवजाति के लिए अपूरणीय होती है। उसे किसी भी कीमत पर दोबारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। अतः समय रहते देशीय भाषाओं का संरक्षण एवं संवर्धन बहुत ही आवश्यक है। विद्वानों का मानना है कि पिछले पचास वर्षों में लगभग 220 भाषाएं लुप्त हो चुकी हैं और भाषाई लुप्तता की यही रफ्तार रही तो 21वीं सदी के अंत तक 7000 भाषाओं में से केवल 700 भाषाएं बच जाएंगी।

देशीय भाषाओं को बचाने एवं उनके सवंर्धन के दिशा में ''देशीय भाषाओं का अंतरराष्ट्रीय वर्ष'' जैसे कार्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इसके अंतर्गत जनमानस में विभिन्न देशीय भाषाओं के महत्व को प्रचारित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों जैसे संगोष्ठियां, परिचर्चाएं, फिल्मों का प्रदर्शन, व्याख्यान पूरे विश्व में आयोजित किए जाएंगे। ❑

–विज्ञान प्रसार, सी–24, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली–110016

कहानी

जंगल और बहेलिया

–अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'

जाड़े का दिन, सुबह का समय था। खरगोश के दो नन्हे-नन्हे बच्चे भर पेट घास खाने के बाद तालाब के किनारे के मैदान में खेल रहे थे। खेल में मस्त उन दोनों को पता ही नहीं था कि मैदान के दूसरे किनारे पर बहेलिए ने उन्हें पकड़ने के लिए जाल बिछा रखा था। उछलते-कूदते, मस्ती करते वे दोनों अचानक जाल में जा फंसे। उन्होंने जाल से बाहर निकलने के लिए बहुत प्रयास किया, खूब हाथ-पांव मारे लेकिन निकल नहीं सके। वे परेशान थे कि तभी उन्हें बगल की झाड़ी पर बैठा कौआ दिखाई दिया। खरगोश के बच्चों से चिल्लाए ''कौआ चाचा! कौआ चाचा! देखो हम जाल में फंस गए हैं। किसी तरह हमें छुड़ा लो। या भाग कर हमारे पापा, मम्मी को खबर कर दो। शायद वे हमें छुड़ाने का कोई उपाय करें। जल्दी कुछ करो चाचा वरना अभी शिकारी आएगा और हम दोनों को पकड़ ले जाएगा।''

''हुंह....बहुत चालाक ना बनो। तुम ठहरे पशु और मैं पक्षी जाति का हूं। तुम जमीन पर रहते हो और मैं पेड़ पर रहता हूं। हमारा, तुम्हारा भला क्या रिश्ता। आज मुसीबत में फंसे हो तो मुझे चाचा कह रहे हो। आज से पहले तो कभी याद नहीं आयी थी चाचा की? मरते हो तो मरो, मुझे क्या। मैं कोई मदद नहीं करने वाला तुम लोगों की।'' कौए ने मुंह बिचका कर कहा और फुर्र से उड़ गया। थोड़ी देर में बहेलिया आया और खरगोश के दोनों बच्चों को पकड़ ले गया।

जंगल के दूसरे छोर पर स्थित बरगद के पुराने पेड़ पर कबूतरों के कई परिवार रहते थे। एक दिन

सवेरे सभी बड़े कबूतर भोजन की तलाश में जा चुके थे। घरों में सिर्फ बच्चे कबूतर थे जो पेड़ की इस डाल से उस डाल पर उछल-कूद कर रहे थे। उन्होंने देखा कि नीचे पेड़ से थोड़ी दूर चावल के ढेर सारे दाने बिखरे थे। चावल के दाने देख उनके मूंह में पानी आ गया। उनका पूरा झुंड एक साथ उतरा और चावल के दाने चुगने लगा। लेकिन यह क्या, दानों के पास बैठते ही वे सारे के सारे जाल में फंस गए। उन्हें पता ही नहीं था कि वहां बहेलिए ने चुपके से जाल बिछा रखा था। जाल में फंसे कबूतर फड़फड़ाने लगे और सहायता के लिए चिल्लाने लगे। कबूतरों के पंखों की फड़फड़ाहट और चीख-पुकार सुन कर बरगद की जड़ के पास बने बिल में आराम से सो रहे चूहे की नींद टूट गयी। वह बिल से बाहर निकल आया। चूहे को देखते ही कई कबूतर एक साथ बोल पड़े-"चूहे भैया ! बड़ी मुसीबत में फंस गए हैं हम लोग। कोई उपाय कर के हमें बचा लो। अपनी तेज दांतों से थोड़ा सा जाल काट दो तो हम बारी-बारी बाहर निकल आयेंगे। भैया, जल्दी करो नहीं तो बहेलिया आता ही होगा।"

"अरे मूर्ख कबूतरों! चावल का दाना देखा नहीं कि तुम लोगों के मुंह में पानी भर आया। यह भी नहीं सोचा तुमने कि इस घनघोर जंगल में चावल के दाने भला कहां से आ सकते हैं। सच ही कहा गया है कि जब लालच आता है तो मति मारी जाती है। तुमने जब लालच किया है तो उसका मज़ा भी चखो। मुझको क्या गरज़ पड़ी है कि मैं जाल काटूं। वैसे भी तुम पक्षी जाति के हो और मैं जानवर जाति का हूं। तुम पेड़ों पर रहते हो, मैं जमीन पर रहता हूं। फिर भला क्यों तुम्हारे लिए अपने दांतों को कष्ट दूं मैं।" चूहे ने जाल में फंसे कबूतरों का मजाक उड़ाते हुए कहा और पुनः अपने बिल में लौट गया। थोड़ी देर में बहेलिया आया और जाल समेट कर कबूतरों के सभी बच्चों को लिए चला गया।

एक दिन शाम का समय था। हिरण का छोटा-सा बच्चा घास चरने के बाद तालाब के किनारे खड़ा पानी पी रहा था कि थोड़ी दूरी पर घात लगा कर बैठे बहेलिए ने उसके पैरों का निशाना साध कर एक मोटा-सा डंडा फेंका। डंडा लगते ही हिरण का छौना चारों खाने चित्त हो गया और इससे पहले कि वह संभल पाता, बहेलिए ने दौड़ कर उसे दबोच लिया। बहेलिए ने उसके पैरों को रस्सी से बांधा और उसे गोद में उठा कर चल दिया। पास ही पेड़ की डाल पर बैठा बंदर यह सब देख रहा था। उसको देख हिरण का बच्चा चिल्लाया-"बंदर मामा! बंदर मामा! देखो यह बहेलिया मुझे पकड़ कर लिए जा रहा है। मुझे बचा लो बंदर मामा।"

"तुम जमीन पर रहने वाले जानवर हो और मैं पेड़ पर रहने वाला। मैं क्यों मदद करूं तुम्हारी? अपने जमीन पर रहने वालों से मदद मांगो।" बंदर ने दांत दिखा

कर हंसते हुए कहा और उछल कर दूसरे पेड़ पर चला गया।

उसके तीन दिन बाद ही बहेलिया एक बड़ा सा पिंजरा ले कर आया। उस समय बंदर और बंदरिया अपने दो छोटे बच्चों को अकेला छोड़ कर भोजन की तलाश में गए हुए थे। बहेलिए ने पिंजरे में फल डाले और उसे झाड़ियों के पास छिपा कर रख दिया। स्वयं वहीं पास में छुप गया। बंदर के बच्चों ने फल देखे तो उसे लेने के लिए पिंजरे के भीतर चले गए। एकाएक तभी बहेलिए ने पिंजरे के दरवाजे में बंधी रस्सी खींच ली और दोनों को पकड़ ले गया। पास ही आम के पेड़ पर बैठे बाज़ ने बहेलिए को आते, पिंजड़ा लगाते तथा उसमें फल रखते देख लिया था। वह चाहता तो बंदर के बच्चों को सावधान कर सकता था या बहेलिए को भगा सकता था। लेकिन उसने वैसा नहीं किया और बंदर के बच्चे फलों के लालच में पड़ कर बहेलिए का शिकार बन गए।

इस तरह बहेलिया आए दिन जंगल में आता और किसी न किसी जानवर या पक्षी को पकड़ ले जाता था। उसे पता चल चुका था कि जंगल के जानवरों में आपसी एकता नहीं है और वे एक-दूसरे की मदद नहीं करते हैं। इसलिए वह बड़े इत्मिनान से अपना काम कर रहा था। बहेलिए के कारण जंगल में आतंक सा छा गया था। सभी पशु और पक्षी हर समय परेशान और आशंकित रहते कि न जाने कब, किसके साथ क्या दुर्घटना हो जाए। जब यह बात जंगल के सबसे बुजुर्ग जानवर हाथी दादा को पता चली तो उन्हें बहुत चिंता हुई। उन्होंने तुरंत जंगल के सभी पशु-पक्षियों की एक बैठक बुलायी। बैठक में खरगोश ने जब रो-रो कर अपने दो नन्हे बच्चों के गायब होने की बात बताई तो कौआ बोल पड़ा- ‘‘खरगोश भाई! आपके दोनों बच्चों का अपहरण मेरे सामने ही हुआ था। उन दोनों ने मुझसे मदद के लिए गुहार भी की थी। लेकिन मैंने उनकी बात अनसुनी कर दी थी। मुझे सचमुच अपनी उस भूल के लिए बहुत अफ़सोस है।’’

उसके बाद जब कबूतरी ने अपने परिवार के ढेर सारे सदस्यों के एक ही साथ पकड़े जाने की बात बताई तो चूहे ने दु:खी मन से कहा-‘‘क्या कहूं कबूतरी चाची उस समय मेरी मति मारी गयी थी वरना तुम्हारे बच्चे बहेलिए के जाल से बच सकते थे। उन्होंने मुझसे जाल काटने के लिए अनुरोध भी किया था लेकिन मैंने उस पर ध्यान नहीं दिया था। मैं चाहता तो जाल को काट सकता था और उन सारे बच्चों की जान बचा सकता था।’’

इसी प्रकार जब रोती हुई हिरणी ने अपने छोटे से छौने के गायब होने की बात कही तो बंदर खड़ा हो गया और कहने लगा- ‘‘मुझे माफ कर दो हिरणी बहन। तुम्हारे छौने के पकड़े जाने के लिए मैं दोषी हूं। मेरे सामने ही बहेलिया उसे पकड़ कर ले जा रहा था और तुम्हारा छौना बंदर मामा, बंदर मामा कह कर मुझसे मदद के लिए गुहार लगा रहा था लेकिन मैंने उसकी मदद नहीं की। मैं चाहता तो बहेलिए पर हमला कर के तुम्हारे छौने को छुड़ा सकता था लेकिन मैंने सोचा कि पेड़ों पर रहने वाला जीव मैं भूमि पर रहने वाले जानवरों की मदद क्यों करूं। बाद में जब वही बहेलिया मेरे छोटे बेटे को भी पकड़ ले गया तब मुझे महसूस हुआ कि बेटे के खोने से कितनी तकलीफ होती है।’’

इस प्रकार जब सारे पशु, पक्षी अपनी अपनी बात कह चुके तो हाथी दादा ने समझाते हुए कहा-‘‘तुम सभी की बातों से साफ है कि तुम लोगों की आपसी एकता की कमी के कारण ही बहेलिया रोज किसी न किसी पशु, पक्षी को पकड़ने में सफल हो रहा है। अगर तुम लोग एक हो जाओ और एक-दूसरे की मदद करना शुरू कर दो तो बहेलिया तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ पाएगा। यदि सब लोग साथ दो तो उस बहेलिए को

हमेशा-हमेशा के लिए जंगल से भगाया जा सकता है।''

''आप सही कह रहे हैं हाथी दादा। एक अकेला बहेलिया हम इतने सारे जानवरों के लिए मुसीबत बना हुआ है। यदि हम एक हो जाएं तो उसकी क्या मजाल कि वह जंगल की तरफ आंख भी उठा कर देख सके।'' गीदड़ ने कहा।

विचार-विमर्श के बाद आखिर में यह तय हुआ कि आगे से जंगल के सारे पशु-पक्षी सतर्क रहा करेंगे और कहीं भी किसी भी प्रकार का खतरा देखते ही एक-दूसरे को सावधान कर देंगे। यही नहीं यदि जंगल का कोई भी निवासी किसी संकट में पड़ जाता है तो बाकी सारे पशु-पक्षी यथा शक्ति उसकी सहायता भी करेंगे।

दो दिनों के बाद पुन: बहेलिया जंगल में आया। उसे सबसे पहले गौरैया ने देखा। गौरैया ने तुरंत मैना को बताया। मैना ने कौए को बताया, कौए ने तोते से कहा, तोते ने कबूतर को बताया, कबूतर ने बुलबुल से कहा और बुलबुल ने जामुन के पेड़ पर आराम कर रहे लंगूर को बताया। इस प्रकार थोड़े ही समय में जंगल के सारे निवासियों को बहेलिया के जंगल में आने की सूचना मिल गई और वे सभी सतर्क हो गए। आकाश में उड़ते पक्षी लगातार बहेलिया का पीछा करते रहे और देखते रहे कि वह कहां जाता है और क्या करता है।

बहेलिया इस बार सांप की तलाश में आया था क्योंकि दस दिनों के बाद नागपंचमी का त्यौहार आने वाला था और सांप को किसी संपेरे के हाथ बेच कर उसे अच्छा पैसा कमाने की उम्मीद थी। काफी देर तक इधर-उधर भटकने के बाद बहेलिए ने एक पुराने पेड़ की जड़ के पास स्थित सांप के बिल को ढूंढ लिया। बिल के द्वार के पास उसने एक डंडे के सहारे सांप पकड़ने वाली झांपी टिकायी, डंडे से एक रस्सी बांधी और अपने झोले से पानी जैसी कोई चीज निकाल कर बिल के अंदर डाल दी। उसके बाद डंडे से बंधी रस्सी पकड़ कर वह बिल से कुछ दूर छुप कर बैठ गया। बिल के अंदर उसने जो चीज डाली थी उसके प्रभाव के कारण थोड़ी ही देर बाद सांप अपने बिल से बाहर निकल आया। उसके बाहर निकलते ही बहेलिए ने डंडे से बंधी रस्सी खींच दी जिससे झांपी गिर पड़ी और सांप उस झांपी के अंदर बंद हो गया। उसके बाद बहेलिए ने झांपी को सीधा किया, उसका मुंह कस कर बांधा और सांप को ले कर चल दिया।

बहेलिए का पीछा कर रहा कौवा बगल वाले पेड़ की डाल पर बैठा सब-कुछ देख रहा था। बहेलिये ने जैसे ही सांप को झांपी में कैद किया, कौआ अपनी सांकेतिक भाषा में कांव-कांव चिल्लाने लगा। कौवे की आवाज़ सुनकर देखते ही देखते वहां ढेर सारे कौए आ गए। कांव-कांव करते सैकड़ों कौवों ने बहेलिए को घेर लिया। इस अचानक हुए हमले से बहेलिया घबरा गया और अपने डंडे से कौवों को उड़ाने लगा। कौवों की आवाज सुन कर लंगूर ने खतरे की बात भांप ली। वह भागता हुआ आया और आते ही उसने बहेलिए पर हमला बोल दिया। गुस्से में दांत निकाले लंगूर को अपनी तरफ लपकता देख बहेलिया सांप की झांपी फेंक जान बचा कर भागा। कौवे और लंगूर बहेलिए को तब तक दौड़ाते रहे जब तक कि वह जंगल से बाहर नहीं चला गया। सांप के पकड़े जाने की बात गिलहरी ने भाग कर चूहे को बताई तो चूहे ने आकर झांपी की रस्सी काट दी। इतने में शोर सुन कर भागता हुआ हिरण भी आ पंहुचा। उसने अपने पैर से झांपी को पलट दिया जिससे झांपी का मुंह खुल गया और सांप उससे बाहर आ गया। सांप के कैद से मुक्त होते ही सारे पशु, पक्षी अपनी-अपनी राह चले गए। उस दिन के बाद किसी ने बहेलिए को उस जंगल की तरफ आते नहीं देखा। ❑

-सी-2, एच-पार्क महानगर,
लखनऊ-226006

पेंगुइन

–दीपक कोहली

पृथ्वी के दक्षिणी हिस्से में बर्फ से आच्छादित भाग में बहुत कम प्राणी जीवित रह पाते हैं। किंतु दो पैरों पर डोलते हुए चलने वाले, बर्फीले वातावरण के अनुकूल व उड़ने में असमर्थ पक्षी पेंगुइन के लिए यह स्वर्ग है। पेंगुइन का नाम सुनते ही हम काले-सफेद रंग के शरीर वाले छोटे आकार के जंतु की कल्पना करने लगते हैं। वास्तव में ये पक्षी अनेक आकार और रंग वाले भी होते हैं। कलगीदार पेंगुइन को ही लीजिए जिनके सर पर नीले रंग के पंख मुकुट जैसे दिखते हैं। *एंपरर* और *किंग पेंगुइन* के चेहरे की पार्श्व सतह पर नारंगी और पीले रंग की आभा, काले चेहरे तथा सफेद छाती इन्हें बेहद सुंदर बना देती है। *फिओर्डलैंड, स्नेयर, रॉयल* तथा *रॉकहॉपर पेंगुइंस* की सफेद और पीले रंग के लंबे रेशों वाली भौहें इन्हें बाकी पेंगुइंस से अधिक आकर्षक बना देती हैं। *येलो आइड पेंगुइन* की आंखें पीले रंग से घिरी रहती हैं। कुल मिलाकर पेंगुइन की 17 प्रजातियां हैं।

सबसे छोटे आकार की पेंगुइन प्रजाति *लिटिल ब्लू* लगभग 12 इंच की होती है तथा सबसे लंबी प्रजाति एंपरर पेंगुइन 44 इंच लंबी होती है।

पेंगुइंस उड़ तो नहीं सकते परंतु चप्पू जैसे रूपांतारित हाथ इन्हें बेहद माहिर तैराक बनाते हैं। ये अपने जीवन का 80 प्रतिशत समय समुद्र में तैरते हुए ही बिताते हैं। सभी पेंगुइन दक्षिणी गोलार्ध में रहते हैं हालांकि यह एक आम मिथक है कि

वे सभी अंटार्कटिका में ही रहते हैं। वास्तव में दक्षिणी गोलार्ध में हर महाद्वीप पर पेंगुइन पाए जा सकते हैं। यह भी एक मिथक है कि पेंगुइन केवल ठंडे इलाकों में पाए जाते हैं। गैलापगोस द्वीपसमूह में पाए जाने वाले पेंगुइन भूमध्य रेखा के उष्णकटिबंधीय समुद्री किनारों पर रहते हैं।

यह मांसाहारी हैं। उनका आहार समुद्र में पाए जाने वाले छोटे *क्रस्टेशियन जीव*, *स्क्विड* और मछलियां हैं। पेंगुइन बहुत पेटू भी होते हैं। कई बार तो इनके समूह इतना खाते हैं कि इनकी आबादी के आसपास का क्षेत्र भोजन रहित हो जाता है। प्रत्येक दिन कुछ पेंगुइन तो औसत 200 बार गोता लगाकर समुद्र में 120 फीट नीचे तक भोजन की तलाश में चले जाते हैं।

पेंगुइन के समूह को *कॉलोनी* कहते हैं। प्रजनन ऋतु में पेंगुइन समुद्र के किनारों पर आकर बड़े समूहों में एकत्रित हो जाते हैं। इन समूहों को 'रूकरी' कहते हैं। प्रत्येक प्रजनन ऋतु में एक नर और एक मादा पैंग्विन का जोड़ा बनता है और पूरे जीवनकाल तक साथ-साथ रहकर प्रजनन करता है।

लगभग पांच साल की उम्र में मादा पेंगुइन प्रजनन के लिए परिपक्व हो जाती है। ज्यादातर प्रजातियां वसंत और ग्रीष्म के दौरान प्रजनन करती हैं। आम तौर पर नर पेंगुइन प्रजनन में पहल करते हैं। मादा पेंगुइन को प्रजनन के लिए मनाने के पूर्व ही नर घोंसले के लिए एक अच्छी जगह का चयन कर लेते हैं।

प्रजनन के बाद मादा एंपरर तथा किंग पेंगुइन केवल एक ही अंडा देती है। पेंगुइन की सभी अन्य प्रजातियां दो अंडे देती हैं। एंपरर पेंगुइन को छोड़कर अन्य सभी प्रजातियों में अंडों को सेने का कार्य माता-पिता दोनों बारी-बारी से करते हैं। इसके लिए वे घोंसले में अंडे को पैरों के बीच रखकर बैठते हैं। एंपरर पेंगुइन अंडा नर के जिम्मे सौंपकर मादा कई सप्ताह के लिए भोजन की तलाश में दूर निकल जाती है। पेंगुइन के बच्चे बड़े होकर जब अंडे से निकलने की तैयारी में होते हैं तो वे अपनी चोंच की सहायता से अंडे को तोड़कर बाहर आते हैं। बच्चों को भोजन देने का कार्य नर एवं मादा दोनों करते हैं। भोजन को चबाकर, मुंह से निकालकर बच्चों को दिया जाता है। बच्चों की आवाज से माता-पिता उन्हें खोज लेते हैं।

पेंगुइन की अधिकांश प्रजातियां खतरे में हैं। अंटार्कटिक साइंस में प्रकाशित हाल ही में किए गए शोध के अनुसार अफ्रीका और अंटार्कटिका के बीच दक्षिणी हिंद महासागर के पिग द्वीप पर पेंगुइंस के बड़े समूह में से 88 प्रतिशत तक पेंगुइन घट गए हैं। विश्व के किंग पेंगुइंस की एक तिहाई जनसंख्या यहीं पाई जाती है। पिछले पांच दशकों से वैज्ञानिकों का एक दल हवाई और उपग्रह तस्वीरों से पेंगुइन की कॉलोनी के आकार में परिवर्तन पर निगाहें जमाए हुए था। 1980 में विश्व की सबसे अधिक जनसंख्या वाले किंग पेंगुइन के पांच लाख प्रजनन जोड़े घटकर 2018 में केवल 60,000 जोड़े तक सीमित हो गए हैं। ❑

—उपसचिव, वन एवं वन्य जीव विभाग,
5/104, विपुल खंड, गोमती नगर,
लखनऊ-226010

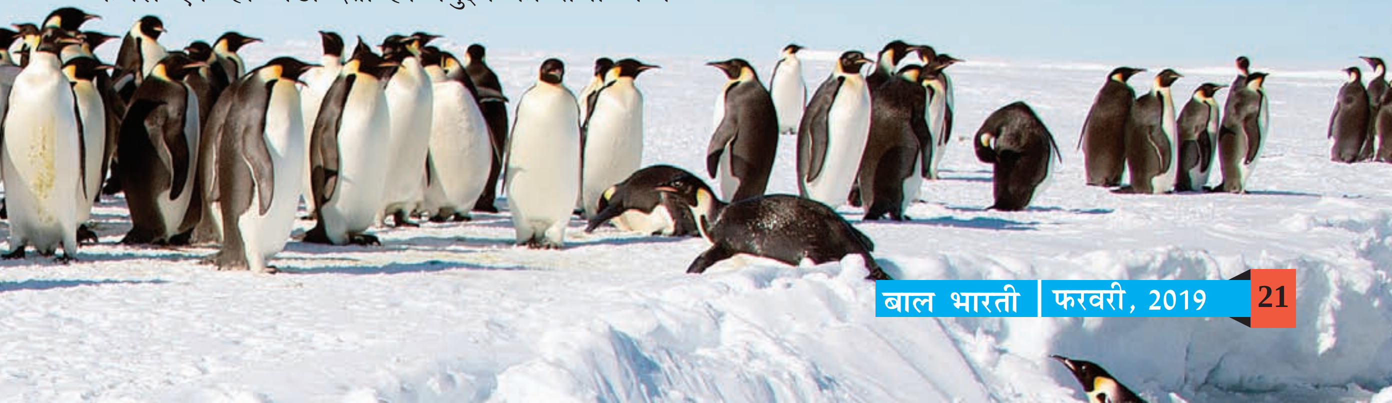

कहानी

पूंछ कटा चूहा

–पवन चौहान

विजय ने जब से अपने मामा जी के यहां सफेद चूहा देखा है तब से वह चूहा पालने की जिद्द पर अड़ा है। उसके मामा जी ने उसे चूहा पालने के लिए दिया भी लेकिन घर वाले चूहा पालने के बिलकुल खिलाफ थे। विजय इस बात से बहुत दुखी हुआ। अर्धवार्षिक परिक्षाएं जल्द शुरु होने वाली थीं इसलिए विजय उसकी तैयारी में लग गया था। परिक्षाओं की तैयारी में चूहे वाली बात को वह भूल भी गया। परिक्षाओं के बाद की छुट्टियों में इस बार विजय अपने माता-पिता के साथ अपने गांव में एक शादी में शामिल होने के लिए पहुंच गया था।

गांव में दादा जी ने गाय पाल रखी थी। वे अपने बड़े बेटे के साथ गांव में ही रहते थे। सर्दी का मौसम दस्तक दे चुका था। इस समय तक किसान फसल काटकर घर के अंदर रख चुके होते हैं। बाहर जब अब खेतों में दाना नहीं मिलता तो चूहे घरों की तरफ आ जाते हैं। वे बहुत नुकसान करते हैं इसलिए दादा जी ने घर और पशुशाला में दो-तीन जगहों पर चूहे पकड़ने के लिए चूहेदानियां लगाई हुई थीं।

विजय जब भी गांव आता तो अपने दादा जी के साथ खूब हंसता-खेलता, काम भी करता और मौज भी मनाता था। आज सुबह विजय दादा जी के साथ पशुशाला गया तो वह खुशी के मारे एकदम चिल्ला पड़ा। पशुशाला में रखी चूहेदानी में एक भूरे रंग का चूहा फंसा था। खुश होते हुए वह दादा जी से बोला, 'कितना प्यारा चूहा है दादा जी!'

'हां बिजु, बहुत प्यारा है। लेकिन तेरे दादा का नुकसान भी ये खूब करते हैं।' दादा जी ने अपनी बात रखी।

विजय नुकसान वाली बात को नहीं समझ पाया। वह आगे बोला, 'दादा जी, क्या मैं इसको पाल सकता हूं।'

'बिल्कुल नहीं बेटा। तुम इसको नहीं पाल सकते।' दादा बोले।

'पर क्यों दादा जी?' हैरानीवश विजय ने पूछा।

'यह तुम्हारे सफेद चूहों की तरह नहीं हैं। ये खतरनाक होते हैं। ये तुम्हें काट सकते हैं और यह सफेद चूहों की तरह एक जगह टिककर भी नहीं रहते।' दादा जी समझाते हुए बोले।

'लेकिन दादा जी मुझे इसे पालना है। मुझे इसे पालने दो न।' विजय मासूमियत भरी आवाज में बोला।

'ठीक है तुम थोड़ी देर इससे खेल लो। फिर बाद में हम इसे घर से दूर छोड़ आएंगे।'

छोड़ने वाली बात पर विजय दुखी हुआ लेकिन चूहे के साथ खेलने वाली बात को सुनकर खुश होते हुए बोला, 'ठीक है दादा जी। बहुत मजा आएगा।'

विजय ने चूहेदानी उठाई और आंगन में उस जगह बैठ गया जहां सुबह की धूप पहुंच रही थी। सर्दी के मौसम में यह हल्की-हल्की धूप खूब आनंदित कर रही थी।

चूहेदानी नीचे रखते ही विजय एक बार फिर जोर से चिल्लाया। लेकिन इस बार की उसकी चिल्लाहट दुख भरी थी।

'दादा जी इसकी आधी पूंछ तो बिल्ली खा गई है। इसकी कटी पूंछ पर खून जमा हुआ है।'

दादा जी चूहेदानी में गहरी नजर डालते हुए बोले, 'बेटा, इसे बिल्ली ने नहीं खाया है। यह पूंछ चूहेदानी का दरवाजा एकदम से बंद होने से कट गई है। ऐसा अक्सर हो जाता है।'

विजय से चूहे की कटी पूंछ नहीं देखी जा रही थी। उसे जहां चूहे पर बड़ा तरस आ रहा था वहीं दादा जी पर इस बात के लिए गुस्सा भी आ रहा था कि वे ऐसी चूहेदानी क्यों लेकर आए हैं जो चूहों को नुकसान पहुंचाती है।

यही सब सोचते हुए वह चूहे के लिए रोटी लेकर आ गया और उसके बहुत छोटे-छोटे टुकड़े करके उसे चूहेदानी के अंदर डालने लगा।

चूहा शायद बहुत समय पहले से फंसा था। उसे भूख भी लगी थी। इसलिए बारी-बारी से रोटी का एक-एक टुकड़ा अपनी अगली दोनों टांगों से उठाता और पिछले दो पैरों पर खड़ा होकर कुतर-कुतर कर बड़े प्यार से खाता। उसे खाते देखकर विजय को आनंद आ रहा था। यदि वह कोई टुकड़ा चूहेदानी के ऊपर से लटकाता तो चूहा एकदम लपककर उसे खाने लगता।

रोटी को खिलाने के बाद विजय ने दादा जी से जख्म पर लगाने के लिए दवाई और पट्टी ली। जैसे ही चूहे की पूंछ चूहेदानी से बाहर निकली उसने तुरंत उसे पकड़ उसमें दवाई लगाकर पट्टी बांध दी। दादा जी इस कार्य में विजय की पूरी मदद कर रहे थे। पूंछ में पट्टी बंधा चूहा बहुत अजीब लग रहा था। विजय उसे एक हल्की-सी मुस्कुराहट के साथ लगातार देखे जा रहा था। उसे वह बहुत ही प्यारा लग रहा था। उसकी छोटी-छोटी लेकिन बाहर को निकली बड़ी-बड़ी आंखें, उसकी मूंछों के बाल और उसकी प्यारी-सी हरकतें उसका सम्मोहन बढ़ा रही थीं। वह काफी देर तक उसकी हरकतों का आनंद लेता रहा। चूहा भी अब उससे डर नहीं रहा था। वह विजय के साथ बराबर खेल रहा था। यदि विजय कोई छोटी लकड़ी चूहेदानी के अंदर घुसाता तो वह उसे अपने अगले दोनों पैरों से पकड़ लेता। यदि वह अपने पिस्तौल की छोटी-छोटी प्लास्टिक की गोलियां उसकी तरफ फेंकता तो वह उन्हें मुंह में लेकर चूहेदानी से बाहर फेंक देता।

विजय जिस ओर अपनी उंगली करता, वह उसी तरफ अपनी गर्दन घुमा लेता। विजय को चूहे की इन प्यारी हरकतों को देखकर बहुत मजा आ रहा था।

विजय को चूहे के साथ खेलते हुए आज पूरा दिन बीत चुका था। अब शाम ढलने लगी थी। दादा जी विजय से बोले, 'विजय बेटा, अब हमें इसे छोड़ देना चाहिए।'

परंतु विजय का दिल अभी भी इसके साथ खेलने को कर रहा था। लेकिन दादा जी के दोबारा कहने पर वह मान गया। दादा चूहेदानी को उठाकर घर से थोड़ी दूरी पर ले गए। विजय भी साथ था। दादा ने चूहेदानी का दरवाजा खोला तो चूहा बाहर निकल आया। परंतु वह भागा नहीं, वहीं खड़ा रहा। दादा जी ने उसे अपने अंदाज में डराकर भगाने की कोशिश की लेकिन वह नहीं गया। यह सब देखकर दादा जी हैरान हो रहे थे। उन्होंने अपने जीवन में कई चूहे पकड़े थे। परंतु ऐसा नज़ारा उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। चूहे तो चूहेदानी का दरवाजा खुलते ही एकदम से बाहर भाग जाया करते थे। पर आज तो अजीब ही बात हो गई थी।

विजय यह सब देख रहा था। चूहे की यह हरकत उसे भी हैरान कर रही थी। वह नीचे झुका और जेब से एक प्लास्टिक की गोली धरती पर फेंक दी। अबकी बार चूहा गोली की ओर बढ़ा और मुंह में दबाकर भाग गया। वह इसे शायद दोस्ती की निशानी समझकर ले गया था। पूंछ पर पट्टी बंधा भागता चूहा बहुत ही मजेदार लग रहा था। विजय उसे नजरों के ओझल होने तक देखता रहा। अब तक रात का अंधेरा छाने लगा था। गाय और उसकी बछिया भी रंभाने लगी थीं। उनका पशुशाला में बांधने का समय हो चुका था। दादा जी के साथ विजय बुझे मन से घर की ओर चल पड़ा। उसे वह प्यारा-सा पूंछ कटा पट्टी बंधा प्यारा दोस्त बार-बार याद आ रहा था। ❑

—गांव व डॉ. महादेव, तहसील
-सुंदर नगर,
जिला- मण्डी (हि.प्र.)-175018

भारी बस्ता

—बलवंत

बहुत सताए भारी बस्ता
मुझे न भाए भारी बस्ता
पापा, थोड़ा कम करवा दो
नींद में आए भारी बस्ता।

बस्ते की है लीला न्यारी
सब जाते इस पर बलिहारी
भांति-भांति के स्वप्न दिखाकर
मन भरमाए भारी बस्ता।

पापा, थोड़ा कम करवा दो
नींद में आए भारी बस्ता।

कठिन हुआ खेलना-खाना
भूल गए हंसना-मुस्काना
चैन चुराए, रैन चुराए
नाच नचाए भारी बस्ता।

पापा, थोड़ा कम करवा दो
नींद में आए भारी बस्ता।

लेकर इसे चला नहीं जाता
इसके बोझ से सिर चकराता
हम नन्हे-मुन्ने बच्चों को
बहुत रुलाए भारी बस्ता।

पापा, थोड़ा कम करवा दो
नींद में आए भारी बस्ता।

—ग्राम-जूड़ी, पोस्ट-तेन्दू, राबर्टसगंज, सोनभद्र- 231216 (उ.प्र.)

मटरू की चतुराई

–सुधा तैलंग

किसी गांव में भोला नाम का एक कुम्हार रहता था। वह अपनी पत्नी निम्मो के साथ मिट्टी के बरतन बनाता और हाट में जाकर बेच देता। भोला के पास एक गधा था मटरू। वह बेहद शरारती और नटखट था। पर काम के बोझ से वह रात-दिन परेशान रहता। भोला के पास एक बकरी भी थी गुल्लो। गुल्लो पूरे घर में उछलकूद करती। उसे देख कर मटरू का भी मन करता कि वह भी उछलकूद व मस्ती करे। पर भोला का डंडा उसे जरा भी आराम नहीं करने देता।

सुबह उठते ही भोला दूर पहाड़ी में मिट्टी ढोने ले जाता। वहां से आकर मटरू को आकर रस्सी से बांध देता। कभी बाज़ार ले जाता तो कभी लकड़ी ढोने रात-दिन उसे काम में लगाए रहता। कभी कभी भोला अपनी पत्नी निम्मो के साथ कपड़ों का गठ्ठर लेकर तालाब जाता, कपड़े धोकर मटरू पर बैठ कर घर आता। मटके तैयार होने पर मटरू पर रखकर हाट में ले जाकर बेचता और वहां से गेहूं, दाल, चावल खाने-पीने का सामान लेकर आता। बिना मटरू के तो भोला का काम ही नहीं चलता था। भोला की पत्नी निम्मो कभी कभी भोला को डांट देती 'अरे! मटरू को कुछ देर तो आराम करने दिया करो। कभी बिना मटरू के भी कुछ काम कर लिया करो।' मटरू को रात-दिन काम करते देख गुल्लो बकरी को भी बुरा लगता।

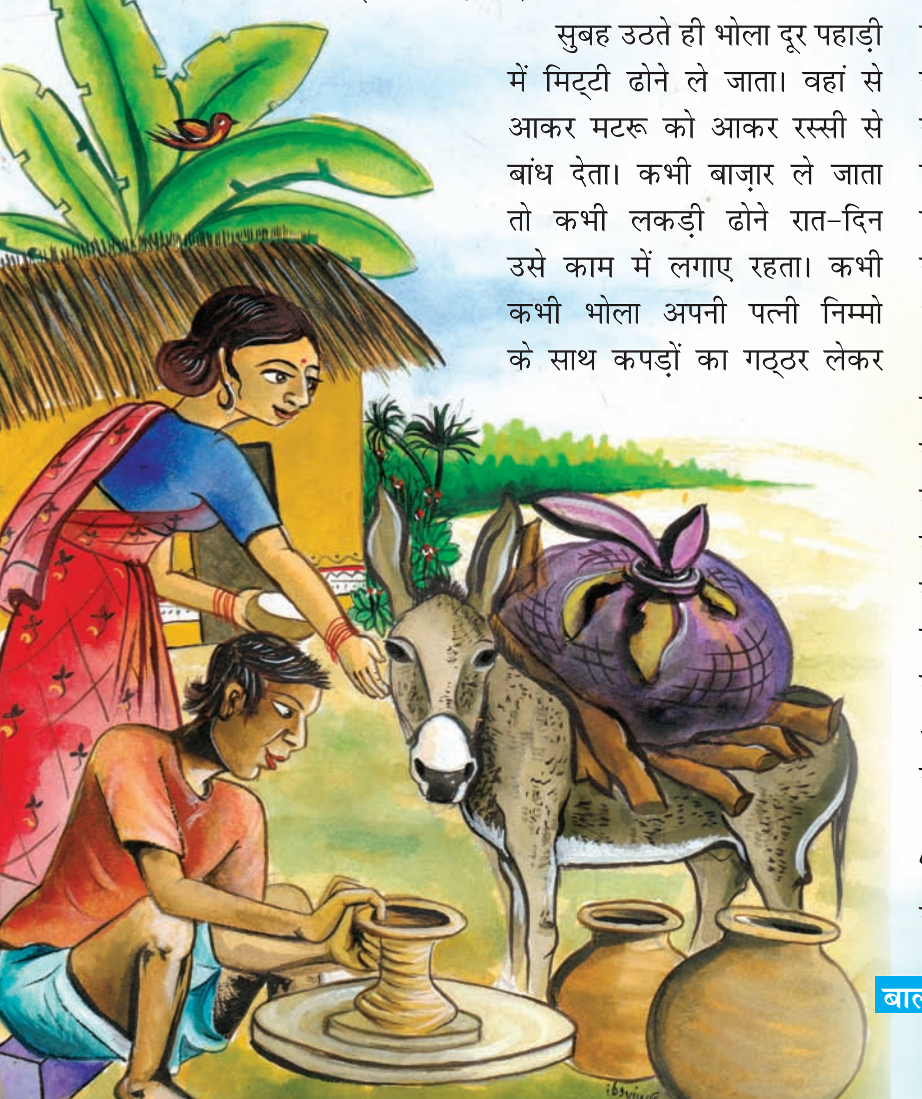

एक दिन जब सुबह भोला व निम्मो सो रहे थे तब गुल्लो बकरी ने मटरू से कहा– "मटरू भाई! मुझे बहुत दु:ख लगता है। जब मालिक रात-दिन तुम्हें काम में लगाए रहते हैं। मेरी मानो तो तुम किसी दिन मौका देखकर जंगल में भाग जाओ। वहां खुली हवा में आराम से रहना। न कोई बंधन न रोक-टोक।"

यह सुनकर मटरू बोला– "गुल्लो बहिन बात तो तुम सही कहती हो। मैं भी यहां काम के

बोझ से परेशान हो गया हूं। पर मालकिन का प्रेम मेरे सब दु:ख दर्द मिटा देता है।''

''हां, ये बात तो सही है हमारी मालकिन तो हमें बहुत प्यार करती है। हमारे खाने-पीने का भी कितना ध्यान रखती है। उसके अपने बच्चे भी तो नहीं हैं।'' गुल्लो ने दु:खी होते हुए कहा।

''गुल्लो बहिन! तुम्हारी सलाह पर मैं जरूर विचार करूंगा। मैं भी आज़ाद होकर जीना चाहता हूं। पहाड़ी पर जहां से मैं मिट्टी लेकर आता हूं उसकी तलहटी में बहुत घना जंगल है, मैंने ऐसा सुना है। क्यों ना मैं वहीं रहने चला जाऊं? जंगल में तो ताज़ी हरी-हरी घास और नदी का पानी मिलेगा'' मटरू ने खुश होते हुए कहा।

''सोच लो तुम तब तक। मैं थोड़ा बाहर घूम कर आती हूं। मालिक के जागने का समय हो गया है।'' ये कहते हुए गुल्लो उछलकूद करती हुई आंगन से निकल गई।

थोड़ी देर बाद भोला बाहर आया और चिल्लाते हुए बोला- ''अरे निम्मो आज सोती ही रहोगी क्या? मैं मटरू को लेकर पहाड़ी पर जा रहा हूं मिट्टी लेने। जब तक तुम घर का कामकाज निपटा लो।''

''हमें अब ज्यादा मटके तैयार करने होंगे। क्योंकि गर्मी का मौसम आने वाला है, ऐसे में मटकों की बिक्री बहुत होगी।''

''ठीक है जाओ पर एक बात का ध्यान रखना मटरू पर ज्यादा मिट्टी मत लाद देना, वह भी बेचारा थक जाता होगा।''

''तुम उसकी ज्यादा चिंता मत करो।''

''अरे मटरू भी हमारे बच्चे जैसा ही है। हमारे तो कोई बच्चे हैं नहीं। मैं जब तक तुम्हारे लिए खाना तैयार करती हूं।'' निम्मो ने खुश होते हुए कहा।

कुछ ही देर बाद भोला दूर पहाड़ी पर मटरू को लेकर जा पहुंचा। भोला ने फावड़े से मिट्टी खोदना शुरू किया और उसे घास खाने के लिए छोड़ दिया। भोला थक गया तो कुछ देर पेड़ के नीचे आंख बंद कर सुस्ताने लगा। मटरू ने देखा तो सोचा कि आज अच्छा मौका है। वह चुपचाप धीरे-धीरे वहां से निकल गया। आगे जाकर उसने तेज दौड़ लगाई। पहाड़ी की तलहटी में वह कुछ ही देर में जा पहुंचा। आज़ाद होकर मन ही मन बहुत खुश हो रहा था। वहीं चारों तरफ घना जंगल था और पास में ही नदी बह रही थी। वहीं जंगल में हिरणों का झुंड छलांगें लगा रहा था। हिरणों को देखकर उसने भी जोर से छलांग लगाई और हिरणों से भी तेज दौड़ लगाई। तभी सामने से गायों का झुंड आता दिखाई दिया। एक बूढ़ी गाय ने उससे कहा ''क्यों गधे बेटा। लगता है तुम यहां नए-नए आए हो।'' मटरू को गधे बेटा सुनकर बहुत बुरा लगा। क्योंकि बचपन से ही उसे सब लोग मटरू कह कर ही पुकारते थे। गांव में तो कोई भी उसे गधा कहता ही नहीं था।

मटरू बोला ''हां मौसी, मैं पहाड़ी के पार के गांव से आया हूं।'' और उसने अपनी पूरी राम कहानी सुना दी। यह सुनते ही गाय बोली देखो बेटा तुम यहां रहना चाहते हो तो रहो पर हम तो शाम होते ही बस्ती में चले जाते हैं। क्योंकि यहां जंगली जानवरों का डर है। रात को शेर, चीता, भालू यहां की नदी में पानी पीने आते हैं। तुम भी हमारे साथ बस्ती में चलो।

''नहीं मौसी! मैं तो अब जंगल में आज़ाद होकर जीना चाहता हूं। बस्ती में गया तो फिर कोई आदमी मुझे पकड़ कर काम करने के लिए रख लेगा।''

''अरे बेटा! तुम्हें काम से नहीं डरना चाहिए। यहां खाली बैठ कर तुम आलसी बन जाओगे। काम करने से तुम स्वस्थ रहोगे। ठीक है शाम होने वाली है, हम जाते हैं। अपना ध्यान रखना।''

''ठीक है मौसी मैं अपना बचाव करना जानता हूं। कहीं गुफा ढूंढता हूं। रात को वहीं ठिकाना

बनाता हूं। कहीं कोई आ नहीं जाए।'' डरते हुए मटरू ने कहा। वह जब तक आगे पहुंचता, पीछे से शेर की दहाड़ सुनाई दी। उसने पीछे मुड़ कर देखा, शेर कुछ ही दूरी पर था। उसने सोचा कि मैं कितना ही तेज दौड़ूं पर शेर तो मुझे पकड़ ही लेगा। कुछ उपाय सोचना पड़ेगा और वह लंगड़ा कर धीरे-धीरे चलने लगा। यह देख कर शेर उसके पास पहुंचा और बोला- ''गधे भाई तुम लंगड़ा कर क्यों चल रहे हो। अच्छा है मेरा आज का भोजन मुझे मिल गया।''

''अरे शेर मामा! मैं जंगल के राजा के कुछ काम आ सकूं यह मेरा सौभाग्य है। पर एक बात बता दूं आपसे कि मेरे पिछले पैर में एक बहुत बड़ा कांटा लगा है। इसीलिए मैं लंगड़ा कर चल रहा हूं। आप मुझे खाओगे तो कांटा आपके गले में चुभ जाएगा। पहले आप मेरा कांटा निकाल दो फिर मुझे आराम से खा लेना'' कहते हुए मटरू ने शेर के मुंह के आगे अपना पैर कर दिया।

शेर जब तक उसके पैर में लगे कांटे को ढूंढता, मटरू ने उसके मुंह पर एक जोर से दुल्लती मारी और वह तेजी से पहाड़ी की तरफ दौड़ पड़ा। मटरू की दुल्लती सीधे जाकर शेर के जबड़े पर लगी और वह कुछ देर के लिए दर्द से कराहता हुआ वहीं बैठ गया और सोचने लगा कि आज जंगल के राजा को एक गधे ने बेवकूफ बना दिया और यह बात अगर मैंने अपने साथियों को बताई तो सब मेरी हंसी उड़ाएंगे।

कुछ ही देर बाद दौड़ता-भागता मटरू पहाड़ी की बस्ती में अपने घर जा पहुंचा। उसे लंगड़ाता देख कर भोला गुस्से से डंडा उठाकर उसे मारने के लिए आ पहुंचा तो निम्मो ने उसके हाथ से डंडा छुड़ाते हुए कहा ''जरूर इस पर किसी जंगली जानवर ने आक्रमण कर दिया होगा। कहीं यह गिर पड़ा होगा। सही-सलामत घर आ गया यह हमारे लिए खुशी की बात है। तुमने मटरू को इतना परेशान कर रखा है कि देखा इसका परिणाम। आज तुम्हें खुद मिट्टी का बोरा सिर पर रख कर लाना पड़ा।''

निम्मो जब गर्म पानी लेकर उसके पैरों में सेक करने आई तो मटरू की आंखों से खुशी के साथ पछतावे के आंसू बह निकले। गुल्लो बकरी बिना बताए ही जान चुकी थी मटरू के साथ हुई घटना को। उसने मटरू के कानों के पास अपना मुंह लाकर धीरे से मिमियाते हुए कहा क्यों मटरू भाई-

जान बची और लाखों पाए।
लौट कर बुद्धू घर को आए।

और दोनों ठहाका मार कर हंस पड़े। ❑

-सिमरन अपार्टमेंट II, प्लॉट नं. -16-17, त्रिलंगा, भोपाल-462039

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

(अप्रैल, 2019)

बाल भारती का लोकप्रिय कॉलम 'चित्र बनाओ प्रतियोगिता' पाठकों की मांग पर पुन: आरंभ किया गया है। इस कूपन के साथ 28 फरवरी, 2019 तक *'हरी-भरी पृथ्वी'* पर आधारित एक आकर्षक चित्र बनाकर हमारे पास भेजें। पुरस्कृत तथा सराहनीय चित्रों को *बाल भारती* में प्रकाशित किया जाएगा। प्रथम विजेता को एक वर्ष तक हमारी ओर से *बाल भारती* की मुफ्त सदस्यता दी जाएगी।

नाम ....

आयु ....

पता ....

....

....

इस प्रतियोगिता में 16 वर्ष तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं।

22 फरवरी, 1906 को उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले की तहसील बिंदकी नामक स्थान पर जन्मे सोहनलाल द्विवेदी हिंदी काव्य-जगत की अमूल्य निधि हैं। राष्ट्रीयता से संबंधित कविताएं लिखने वालों में इनका स्थान मूर्धन्य है। महात्मा गांधी पर आपने कई भावपूर्ण रचनाएं लिखी है, जो हिंदी जगत में अत्यन्त लोकप्रिय हुई हैं। उन्होंने अपने काव्य में गांधीवाद के भावतत्व को वाणी देने का सार्थक प्रयास किया है तथा अहिंसात्मक क्रांति के मर्म को अत्यन्त सरल सबल और सफल ढंग से काव्य बनाकर 'जन साहित्य' बनाने के लिए उसे मर्मस्पर्शी और मनोरम बना दिया है। ऊर्जा, चेतना और जोश से भरपूर लिखने वाले द्विवेदी जी को राष्ट्रकवि की उपाधि से अलंकृत किया गया। 1969 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया था। उनका निधन कानपुर में 1 मार्च, 1988 को हुआ।

कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

—सोहनलाल द्विवेदी

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रंगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा-जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किए बिना ही जय-जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
चित्रकथा : परमात्मा प्रसाद श्रीवास्तव
ए.पी.जे. अब्दुल कलाम उच्च विचारों वाले व्यक्ति थे जिन्होंने भारत ही नहीं बल्कि विश्व में भी अपना स्थान बनाया। अपनी कड़ी तपस्या और उच्च सिद्धांतों के कारण ही वे इस मुकाम तक पहुंचे।
भारत के हर घर में ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का नाम बहुत ही सम्मान के साथ लिया जाता है। यहां का हर विद्यार्थी उनको अपना आदर्श स्वरूप मानता है। इनके कई कथनों ने युवाओं को एक नई दिशा प्रदान की। कलाम जी का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के छोटे से गांव में हुआ, जिसका नाम धनुषकोडी है। इस गांव में वे अपने संयुक्त परिवार के साथ रहते थे। उनके परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। उनके पिता मछुआरों को नाव किराए पर देते थे तथा उनकी माता गृहिणी थीं।
कलाम जी ने अपनी शिक्षा का आरंभ रामेश्वरम के एक प्राथमिक विद्यालय से किया। कलाम साहब ने अपनी पढ़ाई पूरी करने व घर की आर्थिक सहायता हेतु अख़बार बेचने का कार्य आरंभ किया।
इसरो ISRO
DRDO DEFENCE R&D ORGANISATION MINISTRY OF DEFENCE DRDO
कलाम जी ने बारहवीं रामनाथपुरम में संपन्न की। स्नातक की उपाधि प्राप्त करने हेतु सैंट जोसफ कॉलेज में दाखिला लिया जो तिरुचिरापल्ली में स्थित है। किंतु यहां उनकी शिक्षा का अंत नहीं हुआ, उन्हें पढ़ने व सीखने का बहुत शौक था। वह आगे की पढ़ाई हेतु 1955 में चेन्नई जा पहुंचे जहां से उन्होंने 1958 में अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की ।
अगले पेज पर___

उनका सपना था कि वह भारतीय वायु सेना में फाइटर प्लेन के चालक यानि पायलट बन सकें, परंतु यह पूर्ण न हो पाया, पर फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी।

इसके पश्चात उन्होंने भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं विकास संस्थान में प्रवेश किया जहां उन्होंने हावरक्राफ्ट परियोजना का सफल संचालन किया। परंतु अपने कार्यों से संतुष्ट न होने के कारण उन्होंने इसे छोड़ दिया। इसके पश्चात उन्होंने 1962 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में प्रवेश किया। इसरो में उन्होंने कई परियोजनाओं का सफलतापूर्वक संचालन किया, जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण था उनके द्वारा भारत के पहले उपग्रह "पृथ्वी" जिसे पृथ्वी की कक्षा के निकट स्थापित किया जाना।

इस कार्य को कलाम जी ने 1980 में बहुत ही मेहनत तथा लगन के साथ संपन्न किया। उनकी इसी सफलता के बाद भारत भी अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष क्लब का सदस्य बन पाया। इस दौर में वह इसरो में भारत के उपग्रह प्रक्षेपण यान परियोजना के निदेशक के पद पर नियुक्त थे। इसरो के कार्यकाल के दौरान ही उन्होंने और भी उपलब्धियां हासिल कीं जैसे नासा की यात्रा, प्रसिद्ध वैज्ञानिक राजा रमन्ना के साथ मिलकर भारत का पहला परमाणु परीक्षण, गाइडेड मिसाइल्स को डिज़ाइन करना।

इन सबके पश्चात कलाम जी एक सफल तथा ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक बन चुके थे। 1981 में उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। 1982 में वह पुनः भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के निदेशक के रूप में विद्यमान हुए। अब उन्होंने स्वदेशी लक्ष्य भेदी नियंत्रित प्रक्षेपास्त्र (गाइडेड मिसाइल्स) की तरफ अपना ध्यान केंद्रित किया।

कलाम जी को 1990 में फिर पद्म विभूषण से नवाज़ा गया। तत्पश्चात वे 1992 से लेकर 1999 तक के कार्यकाल में रक्षा मंत्री के विज्ञान सलाहकार के पद पर नियुक्त रहे, साथ ही वह सुरक्षा शोध और विकास विभाग के सचिव भी थे। 1997 में उनका भारत के प्रति योगदान देखते हुए उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया। उन्हीं के नेतृत्व में 1998 में भारत ने अपना दूसरा सफल परमाणु परीक्षण किया। कलाम साहब की ही देन है कि भारत आज परमाणु हथियार के निर्माण में सफल हो पाया है। इस दौर में वह भारत के सबसे प्रसिद्ध एवं सफल परमाणु वैज्ञानिक थे।
2002 में उनके प्रति भारत की जनता में सम्मान देखते हुए, जीवन की उपलब्धियों तथा भारत के प्रति उनका लगाव देखते हुए वह भारत के राष्ट्रपति के रूप में हमारे सामने आये। उन्हें "जनता का राष्ट्रपति" कहकर संबोधित किया जाने लगा।
उनके इस कार्यकाल के दौरान उन्होंने कई सभाएं संबोधित कीं जिनमें उन्होंने भारत के तथा यहां रह रहे युवाओं के भविष्य को बेहतर बनाने हेतु बातों पर जोर दिया। यह तो हम सभी जानते हैं कि वे अपनी निजी ज़िंदगी में एक सरल तथा अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे। वे बच्चों से बहुत अधिक स्नेह करते थे, उन्हें हमेशा ऐसी सीख देते थे जो उनके भविष्य को बेहतर बनाने में सहायता करे।

कलाम जी राजनीतिक व्यक्ति नहीं थे, किन्तु राजनीति में रहकर वे देश के विकास के बारे में सोचते थे। वे जानते थे कि युवाओं का बेहतर विकास ही देश को आगे लेकर जा सकता है। वे चाहते थे कि परमाणु हथियारों के क्षेत्र में भारत एक बड़ी शक्ति के रूप में जाना जाए। उनका कहना था कि "2000 वर्षों के इतिहास में भारत पर 600 वर्षों तक अन्य लोगों ने शासन किया है। यदि आप विकास चाहते हैं तो देश में शांति की स्थिति होना आवश्यक है और शांति की स्थापना शक्ति से होती है। इसी कारण प्रक्षेपास्त्रों को विकसित किया गया ताकि देश शक्ति संपन्न हो।"

कलाम जी का राष्ट्रपति कार्यकाल 2007 में समाप्त हुआ। इसके पश्चात वह कई जगहों पर प्रोफेसर के तौर पर कार्यरत रहे जैसे–शिलोंग, अहमदाबाद तथा इंदौर के भारतीय प्रबंधन संस्थानों व बंगलुरु के भारतीय विज्ञान संस्थान। उसके बाद वह अन्ना विश्वविद्यालय में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग के प्रोफेसर रहे। इन्होंने भारत के कई अन्य प्रसिद्ध शैक्षिक संस्थानों में भी अपना योगदान दिया। शायद बहुत कम लोग ये जानते होंगे कि वे गीता और कुरान, दोनों का अनुसरण करते थे। उन्हें भक्ति गीत सुनने का तथा वाद्य यंत्र बजाने का भी बहुत शौक था। उनका लगाव भारत की संस्कृति के प्रति बहुत अधिक था।

27 जुलाई, 2015 को ये "मिसाइल मैन" हम सब को छोड़ कर चले गए तथा उनका जाना हमारे देश के लिए कभी पूर्ण न होने वाली क्षति थी। कलाम साहब की मृत्यु की वजह दिल का दौरा था। यह उस वक़्त हुआ जब वह शिलोंग के भारतीय प्रबंधन संस्थान में एक व्याख्यान दे रहे थे। 28 जुलाई को उन्हें दिल्ली में तथा 29 जुलाई को उन्हें मदुरै में श्रद्धांजलि दी गयी।

30 जुलाई को उन्हें उन्हीं के नगर रामेश्वरम में पूरे सम्मान के साथ दफनाया गया तथा यहां उन्हें लाखों लोग श्रद्धांजलि देने पहुंचे।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्वर्गीय डॉक्टर ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के 79 वें जन्मदिन को 'विश्व विद्यार्थी दिवस' के रूप में मनाया गया। उन्होंने युवाओं को प्रेरित करने हेतु कई किताबें लिखीं जो बहुत ही प्रभावशाली हैं। द विंग्स ऑफ़ फायर, ए मैनिफेस्टो फॉर चेंज, इंस्पायरिंग थॉट्स, इत्यादि लोकप्रिय एवं चर्चित रही हैं।

कहानी

मिनी पिकनिक

–राम करन

सूरज क्षितिज की ओर लपक रहा था। धीरे-धीरे वह लाल होने लगा। हरे-हरे खेतों पर सुनहली किरणें पड़ने से उसकी सुंदरता बढ़ गई थी। बिट्टू को यह दृश्य बड़ा सुहावना लगा। वह खेतों की तरफ चल पड़ा। खेतों में गेहूं के नन्हे-नन्हे पौधे उग आए थे। लगता था कि किसी ने खेतों में हरे कालीन बिछा दिए हों। वह जैसे-जैसे मेंड़ों पर आगे बढ़ रहा था, सूरज पीछे खिसकता जा रहा था। वह गन्ने के खेत के पास पहुंचा तो एकाएक फर्र की आवाज हुई और एक साथ ढेर सारी छोटी-छोटी चिड़ियां उड़ गईं। लेकिन दूसरी तरफ बहुत सारी चिड़ियां अभी भी बैठी थीं और चीं-चीं, चूं-चूं कर रही थीं। बगल के खेत में मटर थी। खूब फैली हुई। इधर-उधर बिखरी वल्लरियां मानो उसे टुकुर-टुकुर देखने लगी। मटर की फलियां गदरा रही थीं। एक तरफ गन्ना, दूसरी तरफ गेहूं और बगल में मटर की हरियाली! बिट्टू उन्हें निहारने लगा। तभी उसने देखा कि उसका दोस्त असलम पगडंडियों से जा रहा था। उसने उसे आवाज दी। वह भी मुड़ा और उसके पास आ गया।

असलम ने मटर की तरफ तरफ देखकर इशारा किया – ''क्या इरादा है?''

बिट्टू ने कहा – ''जो कहो। मेरा तो गन्ना चूसने का मन है।''

असलम बोला– ''अगर इसके साथ मटर का चखना भी हो तो?''

''हां, यह भी ठीक है।''

बिट्टू गन्ने के खेत में घुस गया। उसने पहले कुछ सूखी पत्तियां निकाल लीं और उन्हें खेत के एक कोने में साफ करके रख दिया। दो गन्ने भी तोड़ लिए। तब तक असलम मटर तोड़ लाया। सूखे पत्तियों के ऊपर मटर रखकर उसने आग लगा दी। चड़-चड़ की आवाज के साथ वह जलने लगा। कुछ ही देर में जब मटर भुन गए तो वह गन्ना चूसने लगे और मटर के दाने छुड़ाकर खाने लगे। वाह! क्या बात थी। दोनों को मजा आ गया। बिट्टू बोला – ''नमक-मिर्च होता तो और भी अच्छा होता।''

''कल फिर मिलते हैं,'' दोनों मित्र आनंद उठा रहे थे, ''अच्छा हमें देखना होगा कि आग कहीं रह न जाए,'' वे गन्ने की जड़ से उसे पीटने लगे। दोनों आश्वस्त होना चाह रहे थे कि एक भी चिंगारी वहां बच न पाए। तभी असलम को कुछ दिखाई पड़ा– ''ओ त्तेरी की!'' बिट्टू चौंक पड़ा। उसे लगा कि वहां कोई बिच्छू निकल आया– ''क्या है?'' असलम ने गन्ने की जड़ को ज़मीन पर पटका। बिट्टू झुंझलाया– ''बताते क्यों नहीं? मुझे तो कुछ भी नहीं दिख रहा।'' असलम ने जड़ को एक बार और वहीं रगड़ा– ''देखते नहीं कई कीड़े मर गए हैं। ये देखो इसमें केंचुआ भी है।'' बिट्टू राहत की सांस लेते हुए बोला– ''तुमने तो डरा ही दिया था। मैं समझा कि कोई जहरीला जीव आ गया।'' असलम ने उसके कंधे पर धौल जमाया– ''तुम अभी भी समझ नहीं पा रहे हो। यह केंचुआ एक कीड़ा ही नहीं, किसान-मित्र भी है। हमने पढ़ा तो था। तुम्हें याद नहीं?''

बिट्टू कुछ सोचते हुए बोला– ''हां, किसान-मित्र के बारे में पढ़ा था, किंतु एक-दो के नष्ट हो जाने से क्या होता है...?''

''ऐसा तुम नहीं कह सकते,'' उसे रोकते हुए असलम बोला, ''पढ़े-लिखे होकर अनभिज्ञों की तरह बात करोगे तो अच्छा नहीं लगेगा। जानबूझकर अनजान बनने के कारण हर साल न जाने कितने कीड़े मर रहे हैं। खेत बंजर हो रहे हैं। हमें यह मानना होगा कि हमसे गलती हो गई।''

बिट्टू बोला– ''सच्ची! लेकिन अब क्या कर सकते हैं?''

''इससे एक सीख ले सकते हैं। हमने अपने पिकनिक के लिए थोड़ा सोचने की तकलीफ नहीं की। देखो उतने दूर की जमीन में दरार आ गई है। अनावश्यक पत्तियां जलाने से प्रदूषण भी हुआ। कुछ लोग तो अपनी पूरी पराली फूंक देते हैं। सोचो धरती को कितना कष्ट होता होगा?''

''ओह! हम इसे एक भूल की तरह ले सकते हैं। लेकिन इससे सीखना होगा। एक बार की गलती, गलती मानी जा सकती है, पर दूसरी बार यह अपराध कहा जाएगा। मैंने तो निश्चय कर लिया कि अब भविष्य में इस बात का ध्यान रखूंगा।''

असलम ने कहा– ''इस धरती को बचाने के लिए छोटा-छोटा योगदान महत्वपूर्ण है। मैं भी इसका ध्यान रखूंगा।''

दोनों साथ-साथ चलने लगे।❑

–अपरा सिटी फेज-4, ग्राम व पोस्ट-मिश्रौलिया, जनपद-बस्ती, उत्तर प्रदेश, पिन-272124

फिल्मों में बच्चों के गीत

–राजीव श्रीवास्तव

कितना सुखद लगता है जब हमें ये बताया जाता है कि भारत के स्वाधीनता संग्राम में छोटे बच्चों ने भी अपना योगदान दिया था। हिंदी सिनेमा में जब 'बाल सिने गीत' पर बात होती है तो स्वतंत्रता पूर्व के देशभक्ति गीतों में 'चल चल रे नौजवान' (बंधन–1940) सहगान सबसे पहले याद आता है। ये गीत उन दिनों गांव-गांव, गली-गली, नगर-नगर बच्चों द्वारा गाया जाता था। इस प्रसिद्ध गीत को लिखा था कवि प्रदीप ने और इसके संगीतकार थे अनिल बिस्वास। इस गीत की अपार लोकप्रियता से प्रेरित हो कर इन्हीं कवि प्रदीप और संगीतकार अनिल बिस्वास ने युवाओं के लिए एक और राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत गीत रचा – 'दूर हटो ऐ दुनिया वालों हिंदुस्तान हमारा है' (किस्मत–1943) जिसे तब छोटे बच्चों ने भी गुनगुनाया था। बच्चों में राष्ट्र प्रेम, देश भक्ति और कर्तव्य पालन की अलख जगाते गीतों में देश की स्वतंत्रता के बाद भी ढेरों बाल गीतों की एक लंबी सूची है। 'आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं झांकी हिंदुस्तान की' (जागृति–1954), 'सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तां हमारा' (भाई बहन–1959), 'इंसाफ की डगर पे बच्चों दिखाओ चल के' (गंगा जमुना–1961) के साथ ही शांति माथुर के ओजपूर्ण स्वर में 'नन्हा मुन्ना राही हूं देश का सिपाही हूं, बोलो मेरे संग जय हिंद जय हिंद जय हिंद' (सन ऑफ इंडिया–1962) को भला कोई कैसे भूल सकता है। हम तो अपने बचपन में 'जय हिंद' वाला ये गीत पूरे उत्साह के संग कदमताल करते हुए गाते थे।

छोटे बच्चों को तो कहानी-किस्से बहुत ही प्रिय होते हैं। चलिए, हम आपको बताते हैं कि हमारी फिल्मों में बच्चों को कहानी सुनाता हुआ पहला गीत

कौन-सा था। बात उन दिनों की है जब आपकी दादी, दादा जी, नानी और नाना जी छोटे बच्चे हुआ करते थे। पहला सबसे लोकप्रिय बाल गीत 'एक राजे का बेटा ले कर उड़ने वाला घोड़ा' था जिसे फिल्म 'प्रेसिडेंट' (1937) में अपने समय के सुप्रसिद्ध नायक-गायक के एल सहगल (कुंदन लाल सहगल) ने गाया था। ये वह समय था जब फिल्मों के नायक अपने गीत स्वयं गाया करते थे। आप जब अपने-अपने दादा जी, नाना जी से इस गीत के बारे में पूछेंगे तो उन्हें अपना बचपन याद आ जाएगा और तब वे आपको अपने समय के और भी ऐसे कई गीत सुनाने लग जाएंगे। दशकों बाद इसी तरह का एक दूसरा गीत आज के आपके प्रिय महान नायक-गायक अमिताभ बच्चन ने अपनी फिल्म 'मिस्टर नटवरलाल' (1979) में बच्चों के लिए गाया था- 'मेरे पास आओ मेरे दोस्तों एक किस्सा सुनाऊं।' याद आया।

अपनी-अपनी दादी और नानी से सभी बच्चों का विशेष लगाव होता है। इनसे बच्चे कथा-कहानी तो सुनते ही हैं पर साथ ही इनके रूठने-मनाने के किस्से भी फिल्मों में गीतों में ढल कर आए हैं जिन्हें आज भी सुनना मन को प्रसन्न कर देता है। 'दादी अम्मा दादी अम्मा मान जाओ' (घराना-1961) में एक ओर जहां मनुहार है तो 'नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए' (मासूम-1960) गीत में नानी के गुणगान करती एक छोटी बच्ची उसे रुसा-रूसी छोड़ कर एक पैसा देने का प्यारा-सा अनुरोध भी करती है। इस सुंदर से गीत को कवि-गीतकार शैलेंद्र ने लिखा था, संगीत दिया था हेमंत कुमार ने और गाया था इनकी बेटी रानू मुखर्जी ने। नानी-दादी की बातें तो हो गईं पर मम्मी-पापा के बिना तो बच्चों के गीत अधूरे ही रह जाएंगे। शंकर-जयकिशन के संगीत में हसरत जयपुरी के गीत 'है ना... बोलो बोलो, पापा को मम्मी से, मम्मी को पापा से प्यार है' (अंदाज-1971) का अंदाज सबसे निराला तब भी था और आज भी है।

सभी बच्चे अपने पिता से कितने घुले-मिले होते हैं और उनके लंबे समय तक घर पर न रहने से उनके मन में घुमड़ते प्रेम से ओत-प्रोत विरह के भावों को शब्द देता ये गीत तो आपको याद ही होगा – 'सात समुंदर पार से, गुड़ियों के बाजार से अच्छी-सी गुड़िया लाना, गुड़िया चाहे मत लाना, पप्पा जल्दी आ जाना' (तकदीर-1957) ऐसा ही एक दूसरा भावपूर्ण बाल सहगान 'एक बटा दो, दो बटे चार, छोटी-छोटी बातों में बंट गया संसार, नहीं बंटा है, नहीं बंटेगा, ओ मम्मी-डैडी का प्यार' (कालीचरण-1976) की भावुकता आज भी बच्चों के साथ ही मम्मी-पापा के हृदय को भी छू जाती है। बिछोह के एक और दर्द भरे गीत में अपनी मां के वियोग में छोटा बालक गा उठता है- 'मां मुझे अपने आंचल में छुपा ले गले से लगा ले कि और मेरा कोई नहीं' (छोटा भाई-1966)।

पिता-पुत्र का प्यार, छेड़-छाड़ और नटखट व्यवहार से किस प्रकार भरा-पूरा रहता है, उसके भी अनेक प्यारे उदाहरण हमारे सिने गीतों में हैं। वह जो गीत था 'तू शैतानों का सरदार है, हरदम लड़ने को तैयार है, ओ तेरे बिना मेरा जीना दुश्वार है, डैडी फिर भी तुमको मुझसे प्यार है' (बारूद-1976) गायक मुकेश और उन दिनों की बाल गायिका शिवांगी कोल्हापुरी के स्वरों में जिसने तब खूब धूम मचाई थी। दूसरा गीत 'ओ राजू ओ डैडी, मम्मी से

तुम मेरी सुलह करा दो' (एक ही भूल-1971) को एस पी बालासुब्रमण्यम और राजेश्वरी की वाणी में सभी ने गुनगुनाया था जबकि 'तू मेरा दिल, तू मेरी जान, ओ आय लव यू डैडी' (अकेले हम अकेले तुम-1995) गीत ने भी अपने समय में उदित नारायण तथा उन्हीं के सुपुत्र आदित्य नारायण के युगल स्वरों में अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त की थी। डैडी की बात जब हो रही है तो मम्मी का भी हाल-चाल ले लेते हैं। छोटी बिटिया जब भी अपनी मां से रूठती है तब मां उसे मनाते हुए कुछ ऐसे ही शब्द अपने अधरों पर ले आती है- 'गुड़िया, हमसे रूठी रहोगी कब तक न हंसोगी' (दोस्ती-1964)।

अब कहने को बच्चे तो बच्चे ही होते हैं पर ये कितने सयाने होते हैं, इसे भी इन्हीं के मुख से सुनने का आनंद कुछ और ही होता है। आज के लोकप्रिय युवा गायक-कलाकार आदित्य नारायण के बाल स्वर में उनका चंचल प्रकृति का मधुर गान 'छोटा बच्चा जान के न कोई आंख दिखाना रे' (मासूम-1996) तब और अब भी मन को गुदगुदा जाता है। अब जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता जा रहा है, बच्चे अपने बालपन में ही बड़े होते जा रहे हैं पर वर्षों पहले जब बच्चे अपने बाल सुलभ व्यवहार से सभी का मन मोह लेते थे और साथ में जब वह अपनी किसी बात से लोगों को अचंभे में डाल देते थे तब भविष्य का एक शुभ संकेत नैनों में तैर जाता था। कुछ ऐसे ही निश्छल बाल गीत को भी हम यहां गुनगुना लेते हैं। शैलेन्द्र का लिखा, सलिल चौधरी का संगीतबद्ध किया और किशोर कुमार का गाया 'मुन्ना बड़ा प्यारा अम्मी का दुलारा' (मुसाफिर-1957) और आशा भोंसले का गाया 'चंदा मामा दूर के, पुये पकाए बूर के' (वचन-1955) जैसे दुलारे गीतों के साथ ही 'नन्हे मुन्ने बच्चे तेरी मुट्ठी में क्या है' (बूट पालिश-1953) जैसे सीख एवं ज्ञान के गीत अब कहां लिखे जाते हैं? ऐसा ही एक सीख भरा बाल गीत 'बच्चे मन के सच्चे, सारे जग की आंख के तारे' (दो कलियां-1968) को फिल्म में तब की बाल कलाकार नीतू सिंह पर फिल्माया गया था। अब आप सोच रहे होंगे कि ये नीतू आंटी कौन हैं? अरे, ये आपके आज के प्यारे नायक रणबीर कपूर की मां हैं।

आजकल तो बच्चे पहेली बूझने का काम नहीं करते पर ऐसे कई बाल गीत हमारी फिल्मों में रहे हैं जिनमें खेल-खेल में पहेली बूझते बच्चे आपको मिल जाएंगे। 'इचक दाना बीचक दाना दाने ऊपर दाना' (श्री 420-1955) और 'तीतर के दो आगे तीतर आगे तीतर पीछे तीतर बोलो कितने तीतर' (मेरा नाम जोकर-1970) जैसी पहेली आपके मम्मी-पापा को आज भी याद होंगी। आप सब की बुआ, चाची-चाचा, मामी-मामा के समय के जो बाल गीत थे उनमें 'चल मेरे घोड़े टिक टिक टिक' (चिराग कहां रोशनी कहां-1959), 'लकड़ी की काठी काठी पे घोड़ा घोड़े की दुम पे जो मारा हथौड़ा' (मासूम-1983), 'रेलगाड़ी रेलगाड़ी छुक छुक' (आशीर्वाद-1968) और 'तू कितनी अच्छी है तू कितनी भोली है प्यारी प्यारी है ओ मां' (राजा

और रंक-1968) को 'यूट्यूब' पर जब आप आज देखेंगे तो ये सभी आपको भी प्यारे लगेंगे। बालपन के गीतों में बच्चों को आशीष देता 'तुझे सूरज कहूं या चंदा तुझे दीप कहूं या तारा मेरा नाम करेगा रोशन जग में मेरा राजदुलारा' (एक फूल दो माली-1969) और 'चंदा है तू मेरा सूरज है तू ओ मेरी आंखों का तारा है तू' (आराधना-1969) जैसे गीत आज भी मन को भाते हैं। बाल गीतों के संसार में विचरते हुए यदि 'लोरी' सुने बिना इस यात्रा पर विराम लगा दिया जाए तो यह बड़ा भारी अन्याय होगा। नारी स्वर में यूं तो लोरियां खूब गाई और सुनी जाती रही हैं पर पुरुष की वाणी में बच्चों के लिए लोरी कम ही हैं। हिंदी सिनेमा में पुरुष स्वर में अभी तक की सर्वाधिक लोकप्रिय लोरी गायक मुकेश ने गायी है- 'लल्ला लल्ला लोरी दूध की कटोरी दूध में बताशा मुन्नी करे तमाशा' (मुक्ति-1977)।

बचपन में छोटे बहन-भाइयों के बीच हमारे समय की तरह झगड़े तो आज भी होते हैं। उन दिनों छोटी बहन को खेल-खेल में कैसे मनाया जाता था वह इस गीत को सुन कर आपको पता लग जाएगा- 'फूलों का तारों का सबका कहना है एक हजारों में मेरी बहना है' (हरे रामा हरे कृष्णा-1971)। बाल मन जितना निर्मल होता है उतना ही पवित्र भाव उनके गीतों में समाया होता है। एक बेटे के अनुरोध पर पिता अपने सपनों का गीत कुछ यूं गाता है- 'आ चल के तुझे मैं ले के चलूं एक ऐसे गगन के तले जहां गम भी न हो आंसू भी न हो बस प्यार ही प्यार पले' (दूर गगन की छांव में-1964) बच्चे जब बड़े हो कर कॉलेज जाते हैं तो वे बड़े बच्चे बन जाते हैं। मां-बाप अपने बच्चों के लिए जो सपने देखते हैं, उन्हें पूरा करने का ध्यान अच्छे बच्चे तो रखते ही हैं, तभी तो ऐसे सच्चे बच्चे गाते हैं- 'पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा बेटा हमारा ऐसा काम करेगा' (1988)। आप सब भी तो अपने-अपने मम्मी-पापा के अच्छे बच्चे हैं जिन्हें बड़ा हो कर नाम करना है। है न!

बचपन में बच्चों के मनोरंजन के संग-संग उन्हें सामान्य ज्ञान की सीख देता एक गीत हमारे समय में खूब लोकप्रिय हुआ था जो हमें पूरे हिंदुस्तान की सैर घर बैठे ही करा देता था- 'देखो देखो देखो बाइस्कोप देखो दिल्ली का कुतुबमीनार देखो' (दुश्मन-1972)। हिंदी कविता और गीत के साथ आज के बच्चों को इंग्लिश की *पोयम* भी याद होते हैं। हिंदी सिनेमा में तब अंग्रेजी में भी एक प्यारा सा प्रेरणाप्रद गीत था जिसे बच्चों ने गाया है। राजकपूर की फिल्म 'मेरा नाम जोकर' (1970) में अंग्रेजी भाषा में नितिन मुकेश का गाया ऐसा ही एक प्यारा गीत है जिसे बाल कलाकार के रूप में फिल्म में ऋषि कपूर और स्कूल के उनके साथी बच्चे गाते हैं- 'विश मी लक एज यू वेव मी गुड बाय'। ये अंग्रेजी की प्रसिद्ध कविता हैरी पार डवीस की लिखी है। प्यारे बच्चो! अब मुझे यहां यह बताने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए कि ये ऋषि कपूर आज के हीरो रणवीर कपूर के पापा हैं और सिंगर नितिन मुकेश आज के हैंडसम हीरो नील नितिन मुकेश के डैडी हैं। ❑

-गोल्फ़ अपार्टमेंट, 114, प्रथम तल, गेहा निवास, सुजान सिंह पार्क, 3, महर्षि रमण मार्ग, नई दिल्ली

नकल का धोखा

–रन्दी सत्यनारायण राव

श्यामु जब इस वर्ष भी मैट्रिक की परीक्षा में 'असफल' हो गया तो, उसकी इच्छा हुई कि चुल्लू भर पानी में डूब मरे। मारे दुख व लज्जा से उससे दो पग भी उठाए नहीं जा रहे थे। वह किसी प्रकार अपने मम्मी-पापा को अपनी दुखी शक्ल दिखा सकेगा...? उसे याद आया, इसी तरह गत वर्ष भी उसने 'असफल' होकर आत्महत्या की कोशिश थी, लेकिन पापा के मित्र डॉक्टर अंकल जी के समय पर किए गए ऑपरेशन द्वारा बचा लिया गया था.. फिर उसकी आंखों के सामने से वे सारी घटनाएं चल-चित्र की तरह गुजरती गईं... उस समय अस्पताल में जब उसके होश आया तो पहले-पहल उसकी आंखों में अंधेरा-सा छा गया था, फिर धीरे-धीरे वह स्पष्ट देखने लगा था। अपने सिरहाने खड़े 'मम्मी-पापा' के हुलिए को देख, एकबारगी ही रो पड़ने को हुआ था। मम्मी की सुंदर-तेजस्वी आंखों में एक गहराया-सा सन्नाटा और उनके चारों ओर काले-काले धब्बे से उभर आए थे...। पापा को देखने पर लगता था, जैसे उसकी चिंता में भोजन तथा पानी तक को भूल गए हैं।

'मुझे माफ कर दीजिए मम्मी-पापा...।'

उसकी आवाज से, जैसे मम्मी-पापा का खोया हुआ स्नेह वापस आ गया था, उन्होंने न जाने कितनी बार-चुंबन ले डाले थे उसके...।

बेटे! तुम एक बार तो क्या दस वर्ष भी असफल हो जाओ तो भी इस तरह की हरकत न करना.. और इसमें तुम्हारा भी क्या दोष... एक पर्चे में शायद कॉपी जांचने वाले मास्टर साहब ने ही भूल से कम अंक अंकित कर दिए हों... अगले वर्ष, अच्छे अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण हो जाते...। 'पापा' के धीरज भरे शब्दों को उसने सुना था। करीब डेढ़ माह के बाद उसे अस्पताल

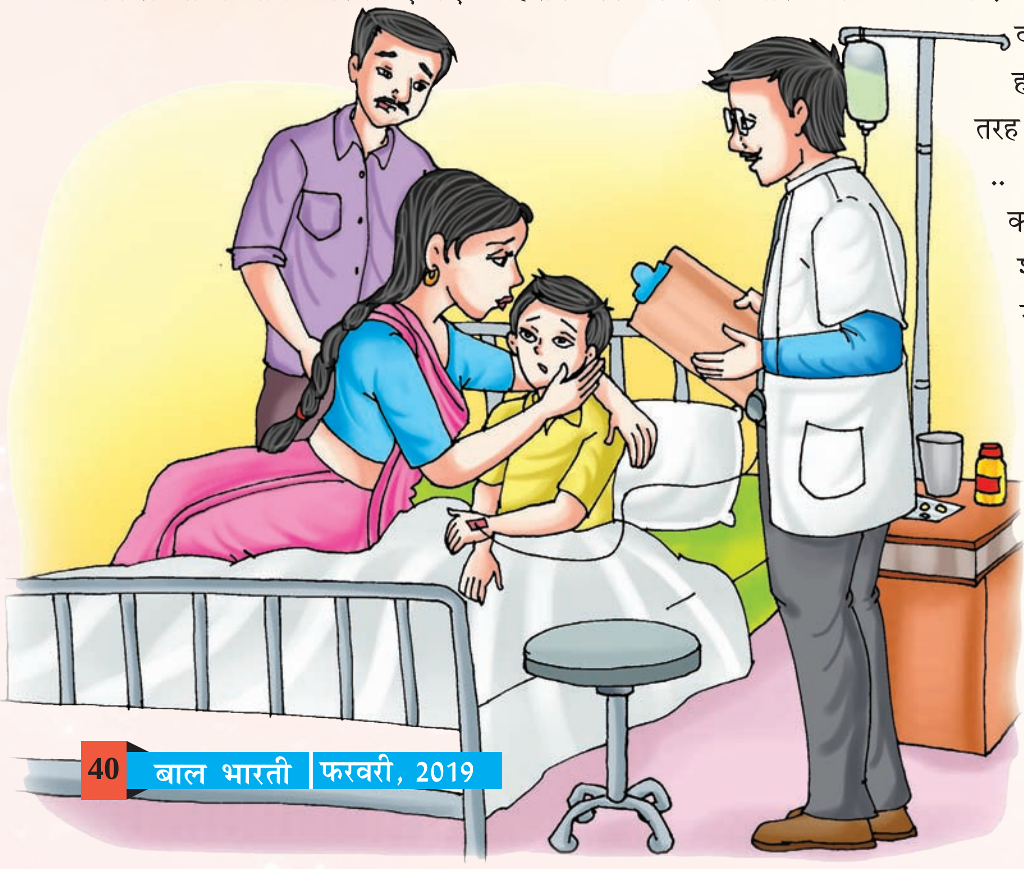

से छुट्टी मिली तो, दूने उत्साह से पढ़ाई की तैयारी में लग गया था... उसने सारी पुस्तकें कंठस्थ कर ली थीं। लेकिन, इसके बाद भी, इस वर्ष भी उसी अंग्रेजी के पर्चे में असफल हो गया। उसने निश्चय कर लिया कि, गत वर्ष की गलती नहीं दुहराएगा। इस प्रकार से मम्मी-पापा को दुखी न होने देना। वह घर जाएगा... पापा, को सारी बातें बता देगा... जैसे, अन्य पर्चों की तरह उसके अंग्रेजी का पर्चा भी अच्छा हुआ? फिर भी वह उसमें असफल क्यों हुआ? हो न हो, इसमें 'कॉपी चेकर' की करतूत है- यही बात उसने अपने पापा को बताई। पापा के द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर उसने ठीक-ठीक दे दिए तो, उसके उन्होंने शाबाशी दी, और स्वयं पूछ-ताछ के लिए स्कूल रवाना हो गए।

हेड मास्टर साहब द्वारा उनके आने का कारण पूछे जाने पर श्यामू के पापा ने अपने मन की बात बताई और उनसे उन्होंने निवेदन किया- 'महाशय, आप इस विषय में यदि प्रयत्न करेंगे तो, इसका समाधान अवश्य निकल सकता है।'

'देखिए! हेड मास्टर महोदय ने श्यामु के पापा को संबोधित करते हुए कहा, 'यदि आपको अपने श्यामु पर पूरा विश्वास है कि उसने अंग्रेजी का पर्चा ठीक दिया है तो, निश्चय ही इस संबंध में, मैं बोर्ड को लिखूंगा। शायद आपके अनुकूल उत्तर प्राप्त हो जाए... यदि ऐसी कोई बात होगी तो आपको डाक द्वारा इसकी सूचना भिजवा दूंगा...।'

कोई तीन सप्ताह बाद श्यामु के पापा के नाम एक रजिस्ट्री पत्र आया, जो हेडमास्टर जी के द्वारा स्कूल से भेजा गया था।

लिखा था.. महाशय, आपका कहना सही था कि आपके श्यामु ने अंग्रेजी का पर्चा ठीक दिया, किंतु.... श्यामु ने जिस प्रकार लिखा है, वह शत-प्रतिशत उसी किताबी भाषा से मिलती है, जैसा कि प्रकाशित है, इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि वह उस पुस्तक की नकल है, इसलिए खेद के साथ यह सूचित करना पड़ता है कि आपका 'श्याम' योग्य होने पर भी 'असफल' घोषित हुआ। भविष्य में यदि आप अपने बच्चे को 'नकल के धोखे, से बचाए रखना चाहते हैं तो उसे 'किताबी भाषा' त्याग कर साधारण बोल-चाल की भाषा में लिखना सिखाएं 'रट' कर लिख देने मात्र से कोई सफल नहीं होता, इससे सही उत्तर भी कभी-कभी नकल के धोखे में गलत करार दिए जाते हैं। आशा है, आप इस उत्तर से संतुष्ट होंगे, शुभ-कामनाओं सहित। ❑

-बी-32/बी, इंदिरा रोड, बागुन नगर, बारीड़ीह, जमशेदपुर-831017

कहानी

खिड़की का कांच

–ऋषि मोहन श्रीवास्तव

आज रविवार था। मोहल्ले के सभी बच्चे मिल-जुल कर क्रिकेट खेल रहे थे। तभी अनिकेत की बॉलिंग पर पवन ने एक छक्का मारा कि गेंद मल्होत्रा अंकल की खिड़की पर पड़ी, कांच की उस खिड़की पर जैसे ही गेंद पड़ी कांच टूट गया। अब तो सारे बच्चे रानू, विवेक, संजय, मयंक चिल्ला उठे- अब क्या होगा। अब तो पवन को मल्होत्रा अंकल की खिड़की ठीक करानी होगी। नहीं तो मल्होत्रा सर हम लोगों का यहां खेलना मुश्किल कर देंगे।

सारे दोस्त अपनी-अपनी राय रख रहे थे। मयंक का कहना था- स्वयं पवन को जाकर मल्होत्रा अंकल से माफी मांग लेनी चाहिए। हेमंत कह रहा था- ''अब तो खैर नहीं। पवन के पापा तक बात जाएगी। वह तो पवन की जमकर पिटाई करेंगे।'' रानू बोला- ''देखो भाईयो, यदि मेरी बात मानो तो सब लोग मल्होत्रा अंकल के घर चलते हैं। हम सब उनसे एक साथ माफी मांगेंगे।'' रानू की बात पर सब लोगों में सहमति बनी।

सब लोग मल्होत्रा अंकल के घर पहुंचे। मोहल्ले के इतने सारे बच्चों को एक साथ देख वह बोले- ''कहो बच्चो, क्या बात है? जो सुबह-सुबह यहां पर।''

बच्चे समझ गए अभी मल्होत्रा अंकल को पता नहीं चला कि उनके पिछले कमरे की खिड़की का कांच बॉल पड़ने से टूट गया है। बच्चे एक-दूसरे को आश्चर्य भरी नजरों से देख रहे थे। कुछ एक-दूसरे को आंखों-आंखों में इशारे भी करने में लगे थे। तभी हिम्मत करके मयंक बोला- 'अंकल जी, हम लोग मैदान में क्रिकेट खेल रहे थे, तभी पवन की गेंद इतनी जोर की पड़ी कि आपके घर के पिछवाड़े की खिड़की का कांच खटाक से बोला।

मल्होत्रा अंकल जो अभी बड़े प्यार से बोल रहे थे, एकदम से तमतमाए गुस्से में बोले- ''कौन नालायक है जिसने मेरी खिड़की का कांच तोड़ा? मैं अभी उसके घर शिकायत करने जाता हूं। तुम लोग क्या इसीलिए क्रिकेट खेलते हो ताकि दूसरों की खिड़कियों के कांच तोड़े जा सकें।''

तभी मल्होत्रा अंकल की बात पर हेमंत धीरे से बोला- ''नहीं अंकल,

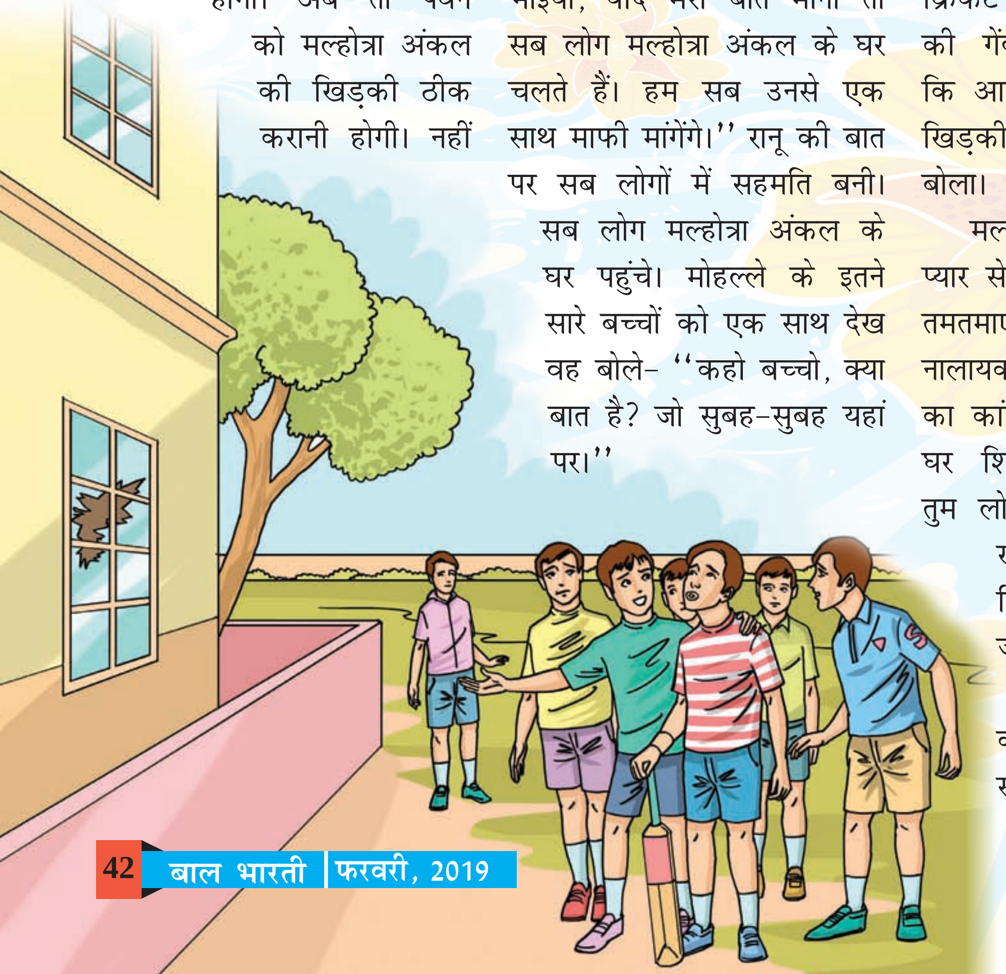

ऐसा नहीं है। हम लोग दूसरों की खिड़कियों के कांच भला क्यों तोड़ेंगे। वह तो पवन का हाथ जोर से चल पड़ा और बस छक्का लग गया।''

मल्होत्रा अंकल पूरे गुस्से में आ गए थे। वह तुनकते हुए बोले, ''बड़े आए सचिन तेंदुलकर बनने। चऊआ, छक्का लगाएंगे।

जमीन से अभी निकले नहीं हैं।'' मल्होत्रा अंकल ने घुड़की देते हुए कहा– 'तुम लोगों को हमारे घर की खिड़की का कांच ठीक कराना होगा। नहीं तो जिस बच्चे ने कांच तोड़ा है उसके घर मैं अभी जाता हूं।'

पवन जो अभी तक डरा-सहमा खड़ा था, वह मल्होत्रा जी के सामने कान पकड़कर खड़ा था। वह अब मल्होत्रा जी से बोला ''अंकल! आपका अपराधी सामने खड़ा है, उसे चाहे जो सजा दो पर उसके घर खबर नहीं भेजिए। मेरे पापा बहुत गुस्सैल हैं, वे मेरी जमकर पिटाई करेंगे।''

अभी बच्चों और मल्होत्रा जी की बातें हो ही रही थीं, तभी भीतर से मल्होत्रा जी की पत्नी बाहर आईं। उन्होंने जब बच्चों के इकट्ठे होने के बारे में पूछा तो रानू ने उन्हें सारी बात बता दी।

श्रीमती मल्होत्रा कहने लगीं– ''देखिए! बच्चे बड़े मासूम होते हैं। वे स्वयं गलती करके आपसे माफी मांगने चले आए। आपको तो पता ही नहीं था कि घर के पीछे वाले कमरे की खिड़की का कांच टूटा है। बच्चों के बताने पर ही आपको खबर लगी। अब आपका फर्ज बनता है, कि इन खिलाड़ी बच्चों को माफी कर दीजिए।''

मल्होत्रा अंकल मुंह बनाए बैठे थे– वह फिर से बोल उठे ''जया, कैसे माफ कर दूं इन शरारती बच्चों को?'' मिसेज मल्होत्रा बोला उठीं– आप भी तो क्रिकेट पसंद करते हैं। घंटों क्रिकेट का मैच देखने टी.वी. के सामने बैठ जाते हैं। आप भी तो सचिन को कितना पसंद करते हैं।

मिस्टर मल्होत्रा ने अपनी पत्नी जया के मुंह से सचिन का नाम सुना तो वे खिल उठे। उनके चेहरे पर मुस्कराहट खिल उठी। मिसेज के कहने पर मिस्टर मल्होत्रा बोल उठे– 'देखो बच्चो, मैंने तुम्हें पहली गलती के लिए माफ कर दिया। बस! अब आगे से सावधानी से खेलना। मेरे घर की खिड़की क्या? किसी के घर का खिड़की का कांच अब टूटना नहीं चाहिए।'

सब बच्चे मल्होत्रा जी की बात सुनकर खुश थे। उन्होंने एक साथ वादा किया ''नहीं अंकल, अब किसी की खिड़की का कांच नहीं टूटेगा।'' सारे बच्चे अब दुबारा से क्रिकेट मैदान में आ चुके थे। उनका खेल शुरु हो गया था। ❑

–एस-1 नित्यानंद विला,
कॉलोनी जीवाजीगंज लश्कर,
ग्वालियर-474001

पिंकू के कारनामे

प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित यह उपन्यास प्रसिद्ध लेखक कार्लो कालोदी के मूल इतालवी उपन्यास *द एडवेंचर्स ऑफ पिनोकियो* का हिंदी रूपांतर है। पिनोकियो एक कठपुतले की कहानी है। इस उपन्यास का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इसका रूपांतर *विश्वनाथ गुप्त* ने *पिंकू के कारनामे* के नाम से बड़ी सहज और सरल भाषा में किया है।

गतांक से आगे...

साथ ही सुप्रसिद्ध छोटे गधे पिंकू उर्फ 'नृत्य का सितारा' का अद्‌भुत नृत्य जो दर्शकों के सम्मुख पहली बार प्रस्तुत किया जाएगा, देखिए।

उस शाम को, जैसा कि तुम अनुमान लगा सकते हो, सरकस का पंडाल खचाखच भर गया। कहीं तिल रखने को भी जगह नहीं बची।

बेंचों पर बच्चे बैठे हुए थे, जो प्रसिद्ध छोटे गधे पिंकू का नाच देखने को उत्सुक थे। जब कुछ खेल-तमाशे हो गए तो सरकस का डायरेक्टर काला कोट, काला पाजामा और चमड़े के बूट पहने दर्शकों के सामने उपस्थित हुआ। आते ही उसने पहले एक लंबा सलाम किया। उसके बाद उसने इस प्रकार कहना शुरू किया:

आदरणीय दर्शकगण, सज्जनो और देवियो! आपको प्रसिद्ध शहर में मैं कुछ खेल-तमाशे दिखाने आया था और आज मैं आप जैसे बुद्धिमान और प्रतिष्ठित दर्शकों के सामने एक प्रसिद्ध छोटे गधे को प्रस्तुत कर रहे हूं, जिसका नाच बड़े-बड़े प्रसिद्ध नेता, विद्वान और कलाकार भी देख चुके हैं। आशा है कि इसका नाच आपको भी पसंद आएगा। धन्यवाद!

उसका यह वक्तव्य सुनकर दर्शक हंसते-हंसते लोट-पोट हो गए और जब वह छोटा गधा पिंकू दर्शकों के सामने आया, तब तो लोग और भी जोर से हंसने और ताली बजाने लगे।

वह इस अवसर पर खूब सजाया गया था। उसके गले में चमकदार लगाम पड़ी थी। उसको सुनहरे गहने पहनाए गए थे तथा रंग-बिरंगे फीते उसके शरीर पर बांधे गए थे।

डायरेक्टर ने उसको दर्शकों के सामने प्रस्तुत करके फिर कहना शुरू कर दिया- महानुभावो! मैं यहां पर उन तकलीफों के बारे में, जो मैंने इस गधे को प्रशिक्षित करने में झेली हैं, आपको बताकर आपका समय नष्ट नहीं करूंगा। जब यह मैदानों में आवारा घूम रहा था तो मेरी नजर इस पर पड़ी। मैंने इसको पालतू बनाने की बहुत कोशिश की, लेकिन व्यर्थ। तब मुझे अपने कोड़े का

प्रयोग करना पड़ा। अंत में किसी तरह प्रशिक्षित हुआ और अब मैं आपके सामने इसको प्रस्तुत कर रहा हूं।

यह कहकर डायरेक्टर ने फिर लंबा सलाम बजाया। इसके बाद पिंकू की तरफ मुड़कर वह बोला– ''खेल शुरू करने से पहले तुम सब महानुभावों को झुककर नमस्कार करो।''

पिंकू ने डायरेक्टर की आज्ञा का पालन करते हुए अपने घुटने टेक कर जनता को नमस्कार किया। इसके बाद उसने डायरेक्टर के आज्ञानुसार कुछ और खेल दिखाए। फिर डायरेक्टर ने उससे कहा अब तेजी से दौड़ना शुरू किया, जिस प्रकार घुड़दौड़ के मैदान में कोई घोड़ा दौड़ता है। तभी डायरेक्टर ने उस पर निशाना बांधकर अपनी पिस्तौल दागी और पिंकू ने ऐसा भाव दिखाया, मानो सचमुच उसके चोट लगी है और वह मरे हुए के समान धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा।

दर्शकों ने तालियां पीटनी शुरू कर दीं। जमीन से उठकर उसने स्वाभाविक रूप से दर्शकों की तरफ देखा। तभी उसने एक बॉक्स में एक महिला को बैठे हुए देखा, जो अपने गले में सोने की जंजीर पहने हुए थी। उस जंजीर में एक छोटी–सी मूर्ति लटक रही थी और वह मूर्ति पिंकू की थी।

...अरे, यह तो मेरी तस्वीर है और यह महिला परी ही है। पिंकू ने उसको फौरन पहचानकर अपने मन में कहा और खुशी से पागल होकर चिल्लाने की कोशिश करने लगा... ऐ! मेरी छोटी परी! मेरी छोटी परी!

...लेकिन उसके गले से सिर्फ रेंकने की आवाज निकली, जिसको सुनकर दर्शक हंसने लगे। खास तौर से बच्चों को तो और भी हंसी आई।

डायरेक्टरों ने उसको इस बात की सीख देने के लिए कि दर्शकों के सामने इस प्रकार रेंकना कोई अच्छी बात नहीं है, अपने कोड़े के डंडे की एक चोट उसकी नाक पर मारी। चोट खाकर बेचारा छोटा गधा अपनी जीभ निकाल कर नाक को चाटने लगा। उसने सोचा शायद इससे थोड़ा आराम मिल जाए।

...लेकिन उसे उस समय बड़ी निराशा हुई जब दूसरी बार देखने पर उसे मालूम हुआ कि बॉक्स खाली हो गया है और परी वहां नहीं है। उसने सोचा– अब वह मरेगा। उसकी आंखों में आंसू आ गए। डायरेक्टर ने देखा। अपना कोड़ा फटकारता हुआ वह बोला... धीरज रखो, पिंकू अब जरा जनता को दिखाओ कि तुम घेरे में कैसे क्या–कुछ कर सकते हो।

पिंकू ने दो–तीन बार कोशिश की, लेकिन जब वह घेरे के सामने आता, तो अपनो साहस खो देता। अंत में एक जोर की छलांग लगाकर वह उसमें से निकल गया। लेकिन दुर्भाग्यवश उसका दाहिना पैर उसमें अटक गया, जिसके कारण वह जमीन पर गिर पड़ा।

जब वह उठा, तो लंगड़ा हो गया था। बड़ी कठिनाई से वह अपने अस्तबल में पहुंच सका।

पिंकू को लाओ। हम उसे देखना चाहते हैं... वहां जो बच्चे बैठे थे, वे चिल्लाकर बोले। उनको उस दुर्घटना पर बड़ा दुख हो रहा था। लेकिन उस शाम को वह दर्शकों के सम्मुख फिर नहीं आया।

दूसरे दिन वहां पशुओं का एक डॉक्टर आया। उसने पिंकू को देख–भाल कर कहा– यह अब जन्म–भर लंगड़ा ही रहेगा।

तब डायरेक्टर ने सोचा... अब मैं इस लंगड़े गधे को रखकर क्या करूंगा। वह खाने के सिवा और क्या काम कर सकता है? इसे तो बाजार में बेच देना चाहिए।

यह सोचकर वह बाजार में

गया। एक खरीददार ने उससे पूछा– तुम्हें इस गधे के बदले में क्या चाहिए।

...पांच रुपये।

...अच्छा लो पांच रुपये। लेकिन यह मत सोचना कि इसे खरीदकर इससे कोई काम लूंगा। मैं तो इसको सिर्फ इसकी खाल के लिए खरीद रहा हूं। चूंकि इसकी खाल बहुत सख्त है, इसलिए मैं उससे एक ढोल बनवाऊंगा।

पाठक सोच सकते हैं कि सुनकर पिंकू की क्या दशा हुई होगी?

पांच रुपये देकर वह पिंकू को समुद्र तट पर ले गया। वहां उसने उसकी गर्दन में रस्सी बांधकर एक पत्थर लटका दिया। फिर उसके पैर भी बांध दिए। तब उसने रस्सी का सिरा मजबूती से पकड़कर उसको अचानक पानी में धकेल दिया।

पिंकू पत्थर के बोझ से दबकर फौरन पेंदे में पहुंच गया और उसका मालिक शांतिपूर्वक एक चट्टान पर बैठकर उसके डूबने का इंतजार करने लगा।

जब पिंकू को पानी में गए हुए पचास मिनट हो गए, तो उसके खरीददार ने सोचा.... अब तक तो वह छोटा गधा पानी में बिल्कुल डूब गया होगा! मैं उसको निकालकर उसकी खाल का एक बढ़िया ढोल बनावाऊंगा।

यह सोचकर वह रस्सी खींचने लगा। वह खींचता गया, खींचता गया और खींचता गया और जब वह खींच चुका, तो उसने देखा कि एक छोटे गधे के स्थान पर एक जीवित कठपुतला रस्सी में बंधा हुआ था।

कठपुतले को देखकर उस आदमी ने सोचा... कहीं मैं सपना तो नहीं देख रहा हूं। मैंने तो इसमें गधा डाला था। अब यह कठपुतला कहां से आ गया? उसको बड़ा अचंभा हुआ और उस अचंभे के कारण उसकी आंखें फैल गईं।

जब वह कुछ संभला, तो उसने कांपती हुई आवाज में सवाल किया... भाई कठपुतले, मैंने पानी के अंदर जिस गधे को धकेला था, वह कहां गया?

...मैं ही तो वह छोटा गधा हूं– पिंकू ने हंसते हुए कहा।

...तुम?

...हां मैं।

...अरे बदमाश! क्या तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो?

...तुम्हारा मजाक...? अरे! इसके विपरीत मैं तो बहुत गंभीरतापूर्वक यह बात कह रहा हूं।

...लेकिन यह कैसे हो सकता है। थोड़ी देर पहले तो तुम गधे थे, अब कठपुतले कैसे बन गए?

...यह समुद्र के पानी का असर है। समुद्र के पानी के कई बार अनोखे परिवर्तन हो जाते हैं।

...मजाक छोड़ो, कठपुतले! यह मत सोचो कि मैं इतनी आसानी से बेवकूफ बन जाऊंगा। अगर मुझे गुस्सा आ गया, तो समझ लो खैर नहीं।

...अच्छा, तो फिर क्या तुम्हें सारी कहानी सुनानी पड़ेगी? अगर तुम मेरे पैरों से रस्सी खोल दो, तो मैं सुनाता हूं।

उस भले आदमी को कहानी सुनने की इतनी उत्सुकता थी कि उसने फौरन उसकी रस्सी खोल दी। पिंकू ने अपने को पंछी की तरह आजाद पाकर कहना शुरू किया... तुम्हें मालूम होना चाहिए कि पहले मैं एक कठपुतला ही था और बाद में एक लड़का बनने जा रहा था। लेकिन अपने बुरे साथियों की सलाह मानकर मैं घर से भाग निकला। एक दिन जब मैं सोकर उठा, तो मैंने देखा कि मैं लंबे-लंबे कानों वाला एक गधा बन गया था और मेरे एक लंबी पूंछ भी उग आई थी। तुम सोच सकते हो, उस वक्त मेरी क्या हालत हुई होगी, मैं लज्जा के मारे जमीन में गड़ना चाहता था।

फिर मुझे बाजार में ले जाया गया और तब सरकस कंपनी के डायरेक्टर ने मुझे खरीद लिया। वह मुझे नाचना-कूदना सिखाकर मुझसे काम लेना चाहता था। मैंने वे सब काम सीखे, लेकिन पहले दिन ही तमाशा-दिखाते वक्त मेरी टांग टूट गई और मैं लंगड़ा हो गया। मेरे मालिक ने मुझे अपने लिए बेकार समझकर तुम्हें बेच दिया और तुम मेरे खरीददार हुए।

...बिल्कुल ठीक है। मैंने तुम्हारे लिए पांच रुपये खर्च किए थे। अब मुझे वे रुपये कौन देगा? खरीददार ने पूछा।

...और तुमने मुझे क्यों खरीदा? इसलिए न कि तुम मेरी खाल के ढोल बनाना चाहते थे।

...तुम ठीक कह रहे हो, लेकिन मुझे अब खाल कहां से मिलेगी?

...निराश मत होओ। दुनिया में गधों की कमी नहीं है।

...अरे दुष्ट लड़के, मुझे बताओ क्या तुम्हारी कहानी खत्म हो गई?

....नहीं। मुझे दो शब्द और कहने हैं। फिर खत्म हो जाएगी।

...तो फिर सुनाओ।

मुझे खरीदकर तुम यहां मुझे मारने के लिए लाए। फिर तुम्हारे मन में मेरे प्रति कुछ दया उपजी और मेरी गर्दन से पत्थर बांधकर मुझे समुद्र में फेंकना ठीक समझा। तुम्हारी इस मानवीय भावना की मैं बड़ी कद्र करता हूं और इसके लिए मैं हमेशा तुम्हारा कृतज्ञ रहूंगा। लेकिन एक बात मुझे फिर भी कहनी पड़ेगी मालिक, कि तुमने अब की दफा यह काम करते हुए परी का जरा-सा ख्याल भी नहीं किया।

...कौन है यह परी?

...वह मेरी मां है। वह भी दुनिया की दूसरी माताओं की तरह है, जो अपने बच्चों को जान से ज्यादा चाहती हैं तथा उनकी मूर्खताओं और बुरी आदतों को बावजूद भी उनको अपनी आंखों के सामने ही रखना चाहती है, यद्यपि वे उसके योग्य नहीं होते। खैर, तो जब उस भली परी ने देखा कि मैं खतरे में हूं, तो उसने फौरन कई मछलियां भेजीं। उन मछलियों ने मुझे वास्तव में एक मरा हुआ गधा समझकर खाना शुरू कर दिया। मुझे तो उनको देखकर बड़ा अफसोस हुआ। मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि मछलियां भी बच्चों की तरह खाने के लिए इस तरह जान देती हैं। कुछ ने मेरे कान खाए, कुछ ने मेरा पेट खाया, कुछ ने गर्दन और कुछ ने मेरे पैरों की खाल। उनमें से एक मछली तो इतनी विनम्र थी कि उसने मेरी पूंछ को ही खाना ठीक समझा। ❑

–क्रमशः

निशानेबाजी : कमाल कर रही है युवा ब्रिगेड

–सुरेश कौशिक

पिछले ढाई दशक में अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी में भारत का रुतबा बढ़ा है। ओलंपिक हो या एशियाई खेल, विश्व चैंपियनशिप हो या राष्ट्रमंडल खेल, इसमें मिले पदकों से देश की साख बढ़ी है। कर्नल राज्यवर्धन राठौड़, जो अब भारत के सूचना एवं प्रसारण तथा युवा मामले व खेल राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हैं, अभिनव बिंद्रा, गगन नारंग, जसपाल राणा, मनशेर सिंह, मानवजीत संधु, जीतू राय और अंजलि भागवत जैसे निशानेबाजों ने प्रतिष्ठित प्रतियोगिताओं में चमकदार प्रदर्शन से छाप छोड़ी है।

इन निशानेबाजों के पदक विजयी प्रदर्शन ने देश के युवा खिलाड़ियों को खेल से जुड़ने के लिए प्रेरित किया है। किशोरावस्था में ही सौरभ चौधरी, शार्दुल विहान, अनीश भनवाला और मनु भाकर चैंपियन निशानेबाजों ने सफलता का पैमाना ही बदल दिया है। जिस प्रतियोगिता में ये उतरते हैं, तहलका मचा देते हैं। साल 2018 में इन्हीं की उपलब्धियां सुर्खियों में रहीं।

आमतौर पर माना जाता है कि किसी भी खेल में शिखरता पर पहुंचने के लिए खिलाड़ियों को वर्षों कड़ी तपस्या करनी पड़ती है। प्रमुख प्रतियोगिताओं में छोटी उम्र के विदेशी खिलाड़ियों का चैंपियंस जैसा प्रदर्शन हमें विचलित कर देता था। हम सोचने को मजबूर हो जाते थे कि वहां की व्यवस्था कैसे छोटी उम्र में चैंपियन खिलाड़ी तैयार कर रही है।

लेकिन उस सोच को हमारी युवा ब्रिगेड ने बदल दिया है। इन्होंने साबित कर दिया है कि सफलता के लिए अब वर्षों पसीना बहाने की जरूरत नहीं। आपका इरादा मजबूत हो तो छोटी अवधि में गोल्ड मेडल जीते जा सकते हैं। इन होनहार निशानेबाजों को साल-डेढ़ साल पहले तक कोई नहीं जानता था। लेकिन आज ये खिलाड़ी हर जुबां पर हैं। ऐसा इसलिए है कि इन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर करिश्माई प्रदर्शन कर दिया है, विश्व रिकार्ड तोड़े हैं, ओलंपिक चैंपियन निशानेबाजों को पछाड़ा है, गोल्ड मेडल जीते हैं।

सटीक निशानेबाजी के लिए अहम होती है एकाग्रता। किसी भी कला में पारंगत होने के लिए खिलाड़ी को कड़ी मेहनत और अपार अनुभव की जरूरत पड़ती है। पर 16 साल के सौरभ चौधरी ने तो इसे झुठला दिया है। अपने निशानेबाजी कौशल और गोल्डन प्रदर्शन से उसने सभी को चकित कर दिया है। चार महीने में चार प्रमुख प्रतियोगिताओं में गोल्ड पर निशाना साधना उनकी प्रतिभा को दर्शाता है।

युवा ब्रिगेड का गोल्डन सफर गत वर्ष अप्रैल में आस्ट्रेलियाई शहर गोल्ड कोस्ट में आयोजित राष्ट्रमंडल खेलों से हुआ। तब 15 साल के अनीश भनवाला और 16 साल की मनु भाकर ने पिस्टल शूटिंग में गोल्ड जीते। क्वालीफिकेशन में 398 और फाइनल्स में 240.9 का स्कोर राष्ट्रमंडल खेलों के इतिहास का सर्वश्रेष्ठ स्कोर है। लेकिन इस प्रदर्शन से उन्होंने जो उम्मीद जगाई, वह चंद माह बाद इंडोनेशिया में हुए

एशियाई खेलों में टूट गई। इन खेलों में दोनों ने निराश किया और खाली हाथ लौटे।

शानदार रहे करियर में मनु के लिए एशियाड की नाकामी पहला बड़ा झटका था। इसका असर विश्व चैंपियनशिप में दिखा। इसमें भी मनु का प्रदर्शन प्रभावहीन रहा। एशियाड से पहले मनु अपनी स्पर्धा में जब भी उतरी, पदक के साथ लौटी थीं। 2017 की एशियाई जूनियर चैंपियनशिप में रजत पदक जीतने वाली मनु ने एशियाड की निराशा को दूर किया ब्यूनस आयर्स (अर्जेंटीना) में, इसी साल अक्तूबर में हुए यूथ ओलंपिक में। अपनी मानसिक दृढ़ता का परिचय देते हुए उसने 10 मीटर एअर पिस्टल स्पर्धा में गोल्ड जीता। इस उपलब्धि से जुड़ने वाली वह भारत की पहली महिला निशानेबाज बनी। मनु ने नवंबर 18 में कुवैत सिटी में एशियाई एअरगन चैंपियनशिप में सौरभ चौधरी के साथ मिलकर 10 मीटर एअर पिस्टल मिक्स्ड स्पर्धा में जूनियर विश्व रिकार्ड तोड़ते हुए गोल्ड जीता।

सौरभ चौधरी का प्रदर्शन शानदार है। अगस्त में एशियाई खेल, सितंबर में विश्व चैंपियनशिप, अक्तूबर में यूथ ओलंपिक और नवंबर में एशियाई एअरगन चैंपियनशिप में सोने का पदक जीतकर सौरभ ने साबित किया कि वह वाकई में चमत्कारिक निशानेबाज है।

15 साल नौ महीने की उम्र में सौरभ चौधरी एशियाई खेलों के इतिहास में स्वर्ण पदक जीतने वाले सबसे कम उम्र के भारतीय निशानेबाज बने थे। पिछला रिकार्ड जसपाल राणा के नाम था जिन्होंने 25 मीटर सेंटरफायर पिस्टल स्पर्धा में 1994 के हिरोशिमा एशियाई खेलों में गोल्ड जीता था। सौरभ का रिकार्ड दो दिन रहा। उनके साथ निशानेबाज शार्दुल विहान ने 15 साल की उम्र में पुरुषों की डबल ट्रैप स्पर्धा में रजत जीतकर रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। चूंकि डबल ट्रैप स्पर्धा अगले ओलंपिक का हिस्सा नहीं होगी, इसलिए विहान ट्रैप स्पर्धा पर ध्यान केंद्रित करेंगे। 12 साल की उम्र के विहान ओलंपियन अनवर सुल्तान की छत्रछाया में अपना कौशल निखार रहे हैं। राष्ट्रीय चैंपियनशिप में एक ही दिन में उन्होंने चार गोल्ड जीतकर तहलका मचा दिया था।

हरियाणा के 15 वर्षीय अनीश ने राष्ट्रमंडल खेलों में 25 मीटर रेपिड फायर पिस्टल में राष्ट्रमंडल रिकार्ड के साथ स्वर्ण पदक जीता था। इन खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाले वह सबसे कम उम्र के भारतीय निशानेबाज बने। पिछले साल सुहल (जर्मनी) में उन्होंने जूनियर विश्व रिकार्ड बनाया था। 2017 का सीजन अनीश के लिए सफल रहा था और उनसे 2020 ओलंपिक में पदक की उम्मीद की जा सकती है।

नेशनल राइफल एसोसिएशन ऑफ इंडिया भी जूनियर खिलाड़ियों पर ध्यान केंद्रित किए हुए है। उनके लिए 2014 से कार्यक्रम चल रहा है। इसमें करीब डेढ़ सौ निशानेबाज राइफल, पिस्टल और शाटगन स्पर्धा के लिए चुने गए थे। इसी पहल का नतीजा है कि आज हमारे जूनियर निशानेबाज अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में देश का नाम चमका रहे हैं।

जरूरत अब इस बात की है कि इन खिलाड़ियों पर सफलता का नशा हावी नहीं होने पाए। इसलिए इन्हें संभालना जरूरी है। ❑

–डी-74, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली

बेटियां

—स्वाती शाकम्भरी

कला, कुशलता और चिकित्सा
कौशल विविध दिखाती बेटी

खेल विविध में सबल प्रदर्शन
देश का मान बढ़ाती बेटी

शास्त्र सुचिन्तन रंजित जन-मन
राह प्रगति की दिखलाती बेटी

देश-धर्म और राष्ट्र सबल हित
सुंदर नीति निभाती बेटी

विश्व पटल पर जागृति लाकर
भेदभाव सब मिटाती बेटी

जननी, भार्या भगिनी बनकर
अपना अर्थ बताती बेटी

पढ़ती बेटी गढ़ती बेटी
सफलता सोपान चढ़ती बेटी

—ट्रंक रोड, सिलचर, सिलचर

नए ग्राहक बनने/सदस्यता के नवीकरण/पता बदलने की सूचना के लिए कूपन

मैं बाल भारती

- ❑ ₹ 160 में एक वर्ष
- ❑ ₹ 300 में दो वर्ष
- ❑ ₹ 420 में तीन वर्ष
- ❑ विशेषांक : ₹ 20

के लिए मंगाना चाहता/चाहती हूं। मैं उचित राशि का डिमांड ड्राफ्ट/पोस्टल ऑर्डर/मनी ऑर्डर नं................दिनांक............भेज रहा हूं/रही हूं।
(उचित बॉक्स पर निशान लगाएं)

- मेरी वर्तमान सदस्यता ....महीने में समाप्त हो रही है। सदस्यता के नवीकरण के लिए एक वर्ष/दो वर्ष/तीन वर्ष का शुल्क ऊपर दिए विवरण के अनुसार भेज रहा/रही हूं।
- मेरा पता बदल गया है। कृपया अब पत्रिका नीचे दिए पते पर भेजें।

(जो पंक्तियां लागू न हों, उन्हें काट दें)

हस्ताक्षर...............................

नाम...
पता...
....
....
मोबाइल नं. ....
ई-मेल आईडी : ....

वर्ग : विद्यार्थी/शिक्षक/संस्था/अन्य

सदस्यता के नवीकरण/पता बदलने की स्थिति में बॉक्स में अपनी सदस्यता संख्या लिखें....

- डिमांड ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर/मनी आर्डर **अपर महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय** के नाम सदस्यता कूपन के साथ निम्न पते पर भेजें :

**विज्ञापन तथा प्रसार व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग,
कमरा संख्या 48-53, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्पलेक्स, लोदी रोड नई दिल्ली-110003**

- पत्रिका मंगाने के लिए आप अपने समाचार पत्र विक्रेता से भी संपर्क कर सकते हैं।

विक्रय केंद्र : प्रकाशन विभाग

नई दिल्ली : सूचना भवन, सी.जी.ओ. कांप्लेक्स, लोदी रोड, दूरभाष : 011-24367260, **लखनऊ** : हाल नं. 1, दूसरी मंजिल, केंद्रीय भवन, अलीगंज, दूरभाष : 0522-2225455, **कोलकाता** : 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, दूरभाष : 33-22488030, **पटना** : बिहार रा. सह. बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, दूरभाष : 0612-2683407, **मुंबई** : 701 बी-विंग, सातवीं मंजिल, केंद्रीय सदन बेलापुर, नवीं मुंबई, दूरभाष : 9522-27570686, **बंगलुरू** : एफ विंग, केंद्रीय सदन, कोरामंगला दूरभाषः 080-25537244, **हैदराबाद** : कमरा नं. 204, द्वितीय तल, सी.जी.ओ. टॉवर्स, कावादि गुडा-500080, **चेन्नई** : राजाजी भवन, बेसेंट नगर, दूरभाष : 044-24917673, **तिरुअनंतपुरम** : गवर्मेंट प्रेस के निकट, दूरभाष : 041-2330650, **गुवाहाटी** : पेंशन पारा रोड, हाउस नं. 4, पी.ओ. शिलपुकरी-3

दुनिया हमारे आस-पास

पेट के जीवाणुओं में 6000 एंटीबॉयोटिक जीन

ब्रिटेन के शोधकर्ताओं ने पेट में मौजूद जीवाणुओं में 6000 से अधिक एंटीबॉयोटिक प्रतिरोधी जीन की पहचान की है। यूनिवर्सिटी ऑफ बर्मिंघन में प्राध्यापक विलेम वैन शाइक के अनुसार, पेट के अधिकांश जीवाणु मानव शरीर को बिना नुकसान पहुंचाए रहते हैं। लेकिन इसमें वह जीवाणु भी रहते हैं, जो संक्रमण पैदा कर सकते हैं। दुर्भाग्यवश यह बैक्टीरिया एंटीबॉयोटिक्स के लिए तेजी से रुकावट बनते हैं और हमें इस विकास में योगदान देने वाली प्रक्रियाओं को समझने की जरूरत हैं। फ्रांस के इंस्टीट्यूट नेशनल डी ला रिसर्च एग्रोमोमीक (आईएनआरए) के शोधार्थियों की एक टीम ने इन जीवाणुओं में प्रतिरोधी जीन की पहचान करने के लिए एक नई विधि विकसित की, जिसके द्वारा टीम ने ज्ञात एंटीबॉयोटिक प्रतिरोधी एंजाइम्स की त्रि-आयामी संरचना की तुलना पेट के जीवाणुओं द्वारा उत्पादित प्रोटीन से की। इसके बाद उन्होंने इस विधि को पेट के लाखों-करोड़ों जीन की सूची में सेट किया, जिससे 6000 से अधिक एंटीबॉयोटिक प्रतिरोधी जीन की पहचान हुई, जो रोगजनक जीवाणु में पहले से पहचाने गए जीन से बहुत अलग थे। शाइक के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि इसमें से अधिकतर जीन जीवाणु में मौजूद होते हैं, जो मानव शरीर को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। इसलिए ये मानव स्वास्थ्य के लिए तत्काल खतरा नहीं हो सकते हैं। लेकिन एंटीबॉयोटिक दवाओं के निरंतर उपयोग से ये प्रतिरोधी जीन रोगजनक जीवाणु में स्थानांतरित हो सकते हैं, जिससे संक्रमण के इलाज में एंटीबायोटिक्स की प्रभावकता कम हो जाती है। यह शोध 'नेचर माइक्रो बायलॉजी' पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

हवा से पानी सोखने वाला उपकरण विकसित

वैज्ञानिकों ने एक ऐसा उपकरण विकसित किया है जो हवा से पानी सोख सकता है और धूप की गर्मी से इसे छोड़ सकता है। अनुसंधानकर्ताओं ने कहा कि यह खोज सुदूर बंजर इलाकों में पेयजल का नया सुरक्षित स्रोत प्रदान कर सकती है। दुनियाभर में पृथ्वी के वायुमंडल की हवा में करीब 13 हजार अरब टन पानी है। इस पानी को प्राप्त करने के लिए कई उपकरण विकसित किए गए लेकिन वे या तो इस काम में अक्षम साबित हुए या महंगे और जटिल साबित हुए। सऊदी अरब की किंग अब्दुल्ला यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के अनुसंधानकर्ताओं ने नया उपकरण विकसित किया है जिसमें सस्ते स्थिर, विषाक्तता रहित नमक और कैल्शियम क्लोराइड का इस्तेमाल किया गया।

इनसाइट लैंडर का मंगल पर पहला उपकरण

नासा द्वारा प्रक्षेपित इनसाइट लैंडर ने मंगल की सतह पर अपना पहला उपकरण स्थापित कर दिया है, जो इस प्रमुख मिशन के लिए मील का पत्थर माना जा रहा है। यह वैज्ञानिकों को सतह की प्रवृत्ति का अध्ययन करके मंगल ग्रह के अंदरूनी भाग को समझने में मदद करेगा। नासा ने एक बयान में कहा कि लैंडर ने जो तस्वीरें भेजी हैं, उनमें सतह पर रखा भूकंपमापी यंत्र दिख रहा है। नासा की जेट प्रोपल्शन लैबोरेटरी (जेपीएल) में कार्यरत इनसाइट प्रोजेक्ट मैनेजर टॉम हॉफमैन के अनुसार, मंगल ग्रह पर इनसाइट की गतिविधियों की समय सारिणी हमारी अपेक्षा से भी कहीं बेहतर हो गई है। हॉफमैन ने कहा, मंगल की जमीन पर सुरक्षित रूप से सेस्मोमीटर लगाना क्रिसमस का एक शानदार उपहार है। उल्लेखनीय है कि 26 नवंबर को मंगल ग्रह की सतह पर उतरने के बाद से इनसाइट की टीम सावधानीपूर्वक मंगल की जमीन पर पूर्ण रूप से सक्षम दो वैज्ञानिक उपकरणों को तैनात करने की दिशा में काम कर रही है।

समुद्री कछुओं में पाया गया माइक्रोप्लास्टिक

तीन महासागरों में सात प्रजातियों के 100 से अधिक समद्री कछुओं के परीक्षण में हर एक कछुए में माइक्रोप्लास्टिक का खुलासा हुआ है। ब्रिटेन में यूनिवर्सिटी ऑफ एक्सेटर और प्लेमाउथ मरीन लेबोरेटरी के शोधकर्ताओं ने पाया कि अटलांटिक, प्रशांत और भूमध्यसागर के 102 समुद्री कछुओं में (पांच मिलीमीटर की लंबाई से कम वाले) कृत्रिम कण सहित माइक्रोप्लास्टिक देखे गए। सभी कछुओं में पाए जाने कृत्रिम कण बहुत हद तक रेशे जैसे हैं जो संभवत कपड़ों, टायरों, सिगरेट के फिल्टर और रस्सियों एवं मछली पकड़ने के जाल जैसे समुद्री साजो-सामान से आए होंगे। यूनिवर्सिटी ऑफ एक्सेटर की एमिली डुनकान के अनुसार, कछुओं पर इन कणों का प्रभाव अभी पता नहीं चला है। उन्होंने बताया, उनके छोटे आकार का मतलब है कि वे बिना किसी रुकावट के आंत से गुजर सकते हैं। यह अध्ययन जर्नल ग्लोबल चेंज बायोलॉजी में प्रकाशित हुआ। इसमें 102 कछुओं में 800 कृत्रिम कणों का अध्ययन किया गया।

(विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं से संकलित)

विश्व पुस्तक मेले में प्रकाशन विभाग की पुस्तकों का सूचना एवं प्रसारण सचिव श्री अमित खरे द्वारा विमोचन

नई दिल्ली के प्रगति मैदान में 5 से 13 जनवरी, 2019 तक आयोजित किए गए विश्व पुस्तक मेले में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग ने भी हिस्सा लिया। विश्व पुस्तक मेले में 5 जनवरी को प्रकाशन विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'भारतीय संस्कृति की झलक' में सूचना एवं प्रसारण सचिव श्री अमित खरे ने सात पुस्तकों का विमोचन किया।

इस अवसर पर किताबें पढ़ने के महत्व पर जोर देते हुए श्री अमित खरे ने कहा कि भले ही हमें सूचनाएं इंटरनेट से मिलती हैं लेकिन जब सच्चा ज्ञान प्राप्त करने और अपनी समझ को विस्तार देने की बात आती है तो हम किताबों के पास ही जाते हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा किए गए अच्छे काम की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि यह विभाग न सिर्फ देश भर के कोने-कोने से ताल्लुक रखने वाले अच्छे लेखकों को अवसर देता है बल्कि भारतीय साहित्य को विदेश में प्रसारित करने में भी मदद करता है।

लोकर्पित की गई पुस्तकों का विवरण इस प्रकार है: बापू के आशीर्वाद, 2500 ईयर्स ऑफ बुद्धिज़्म, पोरट्रेट्स ऑफ स्ट्रेंथ, हिंदी स्वदेश और विदेश में, रंग बिरंगी कहानियां, बादल की सैर और आओ पर्यावरण बचाएं और धरा को स्वर्ग बनाएं।

इस अवसर पर राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय की पूर्व निदेशक डॉ. वर्षा दास, सस्ता साहित्य मंडल की सचिव डॉ. रीता रानी पालीवाल, प्रकाशन विभाग की महानिदेशक डॉ. साधना राउत और अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकार मौजूद थे। ❑

"देश के लोगों से ही लोकतंत्र बनता है। हमारे नागरिक, केवल गणतंत्र के निर्माता और संरक्षक ही नहीं हैं, बल्कि वे ही इसके आधार स्तम्भ हैं।" - **राम नाथ कोविन्द**

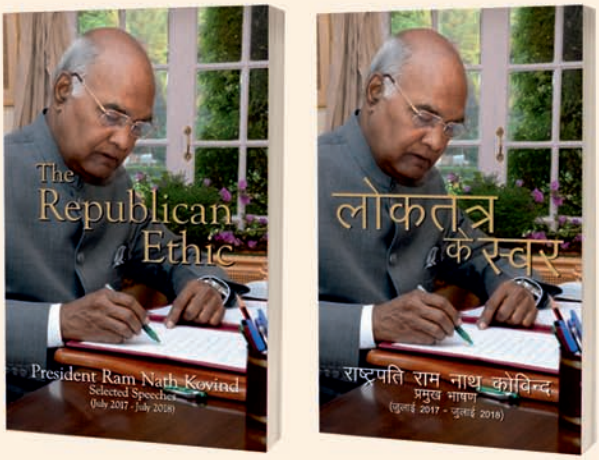

लोकतंत्र के स्वर

एवं

दि रिपब्लिकन एथिक

(राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द के चुने हुए भाषण)

ऑर्डर के लिए संपर्क करें-फोन : **011-24367260, 24365609**
ई मेल : **businesswng@gmail.com**

पुस्तकें www.bharatkosh.gov.in पर ऑनलाइन उपलब्ध हैं।

ई-बुक एमाज़ोन और गूगल प्ले पर उपलब्ध।

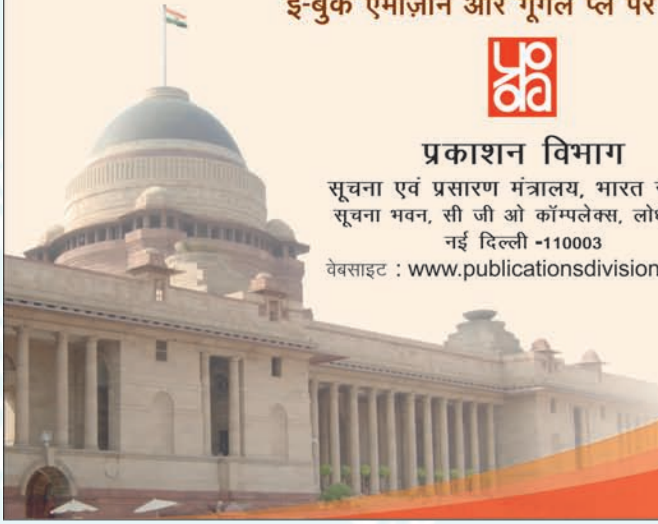

प्रकाशन विभाग
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
सूचना भवन, सी जी ओ कॉम्पलेक्स, लोधी रोड
नई दिल्ली -110003
वेबसाइट : www.publicationsdivision.nic.in

@DPD_India

सूचना और प्रसारण मंत्री ने 'विमन इन इंडियन सिनेमा' पुस्तक का लोकार्पण किया

सूचना एवं प्रसारण तथा युवा मामलों और खेल राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने हाल ही में गोवा में आयोजित अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (आईएफएफआई 2018) के दौरान 'विमन इन इंडियन सिनेमा' नामक किताब का लोकार्पण किया। इस पुस्तक को प्रकाशन विभाग और भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार, पुणे द्वारा प्रकाशित किया गया है। किताब की प्रस्तावना में सूचना और प्रसारण मंत्री ने लिखा है– ''इस किताब का विचार भारतीय सिनेमा में महिलाओं की कहानी, उनकी आकांक्षाओं, संघर्षों, जीत और कई अन्य चीजों के बारे में तस्वीरों के जरिए बयां करने का है। यह किताब पाठकों को उन दिलचस्प तरीकों के बारे में बता सकती है जिनके जरिए फिल्में नारीत्व से जुड़े विचारों के बारे में अलग-अलग परिकल्पना पेश करती रही हैं और इस सिलसिले में चीजों को देखने का नजरिया बदला है और परंपरागत ढर्रे को तोड़ने का प्रयास किया है।''

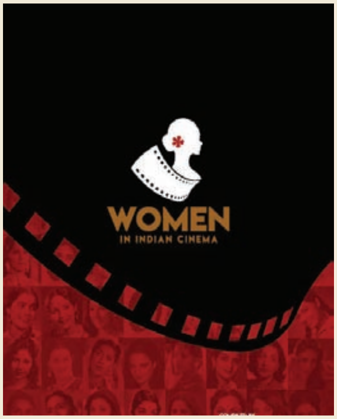

भारत के सभी हिस्सों में फिल्मों ने देश की बदलती सामाजिक और आर्थिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित किया है और इसके साथ ही महिला किरदारों को भी पेश किया है। यह किताब बदलते हुए इन पहलुओं को भी छूने का प्रयास करती है। पुस्तक में भारतीय सिनेमा के चश्मे के जरिए महिलाओं और उनकी बदलती भूमिकाओं की कहानी को पेश किया गया है। साथ ही, जिस तरह से भारत में अलग-अलग ढंग के सिनेमा ने नारीत्व को दिखाया है, उसके बारे में भी वर्णन है। किताब के अध्याय कुछ इस तरह हैं: 'मिथ्स बीइंग रीटोल्ड', 'द सोशल मैसेंजर', 'मेनी बैटल्स टू बी वॉन', 'एन ओड टू द क्रिएटर' और 'फैमिनाइन अंडर डिसगाइज़'। इस किताब में महिलाओं द्वारा निभाई जा रही व्यापक भूमिकाओं की पड़ताल की गई है।

यह किताब बुक गैलरी, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपनी प्रति ऑर्डर करने के लिए इस पते पर ईमेल करें: businesswng@gmail.com ❑